MPEDA

समाचार पत्र

खंड. VII, संख्या. 3, जून 2019

पृष्ठ 03

मंदी और भारतीय समुद्री खाद्य: एक प्रतिबंध या वरदान

पृष्ठ 14

क्लैम में हेपटोपेन्क्रियाज़ पर प्रचलित गलत धारणाएँ

पृष्ठ 39

श्रिम्प हैचरी प्रचालकों के लिए पणधारी बैठक

ISSN 0245-7059

www.mpeda.gov.in

CPF

CPF-TURBO PROGRAM

The shrimp industry has seen major developments and tasted success over the years, And not only are we proud to be part of it, but also take pride in pioneering it. To ensure the success and profitability of the Indian Shrimp Industry, our highly determined team with committed Aquaculture specialists constantly provide the shrimp farmers with access to the latest and updated technology.

CPF-TURBO PROGRAM -
Pioneering Successful and Profitable Shrimp Aquaculture

एम.पी.ई.डी.ए
समाचार पत्रिका

खंड. VII, संख्या. 3, जून 2019

विषय सूची

14 क्लैम में हेपटोपेन्क्रियाज़ पर प्रचलित गलत धारणाएँ

22 भीमावरम में पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम

24 श्रिम्प कृषकों के साथ पणधारी परामर्श बैठक

33 'चिरस्थाई श्रिम्प कृषि' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

36 रोग मुक्त श्रिम्प बीज पर पणधारी बैठक

40 रत्नागिरी में आयोजित प्रथम एचएसीसीपी बुनियादी प्रशिक्षण

41 एक दशक के बाद, केरल में ब्लैक टाइगर श्रिम्प की वापसी

इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों में व्यक्त विचार एमपीईडीए के विचार नहीं है, यह सिर्फ लेखक के विचार हैं।
इस प्रकाशन के विद्वत्तापूर्ण लेखों के जानकारी की सटीकता की ज़िम्मेदारी लेखकों पर निहित हैं,
यह न ही एमपीईडीए और न ही संपादकीय गण की ज़िम्मेदारी है।

एम.पी.ई.डी.ए

खंड. VII, संख्या. 3, जून 2019 समाचार पत्रिका

संपादक मंडल

श्री टी. डोला शंकर, आईओएफ़एस
निदेशक (वि.)

श्री बी. श्रीकुमार
सचिव

श्री पी. अनिल कुमार
संयुक्त निदेशक (अक्वा)

श्री के.वी. प्रेमदेव
उप निदेशक (विपणन संवर्धन)

डॉ. टी.आर. जिबिन कुमार
उप निदेशक (एमपीईडीए रत्नागिरी)

संपादक
श्री डॉ. एम.के. राम मोहन
संयुक्त निदेशक (वि.)

सह संपादक
श्रीमती के.एम. दिव्या मोहनन
वरिष्ठ लिपिक

संपादकीय सहयोग
बिवर्ल्ड कॉर्पोरेट सोल्युशंस लिमिटेड
166, जवहर नगर, कड़वन्त्रा,
कोच्ची, केरल, भारत- 682 020
फोन: 0484 2206666, 2205544
www.bworld.in, life@bworld.in

लेआउट
रोबी अंबाड़ी

कवर चित्र
नौफाल मुहम्मद, बिवर्ल्ड

www.mpeda.gov.in
support@mpeda.gov.in

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की ओर से श्री बी श्रीकुमार, सचिव द्वारा मुद्रित और प्रकाशित
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
एमपीईडीए हाउस, पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036, फोन: +91 484 2311979

द्वारा प्रकाशित
एमपीईडीए हाउस,
पनम्पिल्ली एवेन्यू,
कोच्ची-682 036

प्रिंट एक्सप्रेस
44/1469 ए, अशोका रोड,
कलूर, कोच्ची - 682 017 में मुद्रित

के.एस. श्रीनिवास आईएएस
अध्यक्ष

प्रिय मित्रों,

महीने के दौरान एमपीईडीए को नीति आयोग और मंत्रिमंडल के वरिष्ठ मंत्रियों के एक समूह के समक्ष अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का अवसर मिला, जिनका एमपीईडीए की गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में और राज्य के जलकृषि उत्पादन को बढ़ाने हेतु प्रस्तावित कार्य योजनाओं, जिससे समुद्री उत्पादों का निर्यात बढ़ रहा है, को सूचित करने के लिए प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया। उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग करके, उत्पादन और निर्यात में घातांकी वृद्धि प्राप्त करने के लिए, जबकि 'चिरस्थाईता के साथ निर्यात' वाले सिद्धांत से हटे बिना संसाधनों से प्रभावी ढंग से लाभ उठाने के उद्देश्य से लक्ष्य को प्रस्तुत किया। मैं इसमें 'अनुमार्गणीयता' भी जोड़ना चाहूँगा।

बाज़ार रिपोर्ट सूचित करती है कि अमेरिका के श्रिम्प के उपभोग शुरुआती मंदी के बाद स्थिर हुआ है। इसके अलावा, यह देखा गया है कि बाजार में भारतीय निर्यात द्वारा दिखाई गई वृद्धि की तुलना में इक्वाडोर और इंडोनेशिया से आपूर्ति में वृद्धि हुई। आने वाले महीनों में यूएसए में श्रिम्प आपूर्ति हेतु भारत को खड़ा किया जाएगा। वर्ष के बाजार डेटा भारत को अमेरिकी बाजार में प्रशीतित श्रिम्प के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में पेश करेंगे।

भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात में चीनी बाजार में भी साल-दर-साल 300% की वृद्धि दर्ज की जा सकती है। यह बाजारों के विविधीकरण के हमारे प्रयासों में एक स्वागत योग्य संकेत है, हालांकि कुछ छोटे मुद्दों को अभी भी सुलझाया जाना बाकी है। अक्वा अक्वरिया इंडिया, 2019 की तैयारी अच्छी तरह से प्रगति कर रहा है और उद्यमियों और कृषकों से प्राप्त प्रतिक्रिया बहुत उत्साहजनक है। जलकृषि के विकास ने तटीय राज्यों को बहुत तेज़ी से बदल दिया है। एमपीईडीए को उम्मीद है कि तेलंगाना जैसे अंतर्देशीय राज्य में अग्रिम प्रौद्योगिकियों और संबद्ध क्षेत्रों का प्रदर्शन, जलकृषि क्षेत्र और संबद्ध आर्थिक लाभों के बारे में, तेलंगाना और आसपास के क्षेत्रों में कृषकों और इच्छुक उद्यमियों के लिए एक व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा। प्रदर्शनी का टैग लाइन "भारत के भीतरी इलाकों में नीली क्रांति" रखी गई। हैदराबाद में अक्वा अक्वरिया इंडिया का आयोजन बेहत्तर वैज्ञानिक जलकृषि प्रथाओं की दुनिया में, देश के अंतर्देशीय क्षेत्रों को संभालने के लिए एक प्रोत्साहन प्रदान करेगा, और वहां के संसाधनों के विवेकपूर्ण दोहन के माध्यम से उन क्षेत्रों से बढ़ी हुई निर्यात आपूर्ति प्रदान करने में मदद करेगा। तटीय क्षेत्रों में हुए वैज्ञानिक जलकृषि विकास, अंतर्देशीय ग्रामीण लोक के जीवन को बदलने में सामाजिक लाभ को उत्प्रेरित करेंगे।

मैं एक्वा एक्वरिया इंडिया, 2019 को शानदार बनाने में सभी के हार्दिक सहयोग का अनुरोध करता हूँ।

धन्यवाद।

प्रत्याख्यान : पाठकों से अनुरोध किया जाता है कि वे इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले उसकी सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट करने केलिए उपयुक्त जांच और सत्यापन करें। समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, इस पत्रिका के प्रकाशक और मालिक, किसी भी विज्ञापन या विज्ञापनदाता या किसी भी विज्ञापनदाता के उत्पादों और/या सेवाओं का जिम्मा नहीं लेंगे। किसी भी सूरत में इसमें विज्ञापन केलिए इस पत्रिका / संगठन के मालिक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक, निदेशक/कर्मचारी, किसी भी तरीके से जिम्मेदार/उत्तरदायी नहीं हो सकते।

एमपीईडीए बाहरी इंटरनेट साइटों की सामग्री केलिए जिम्मेदार नहीं है।

मंदी और भारतीय समुद्री खाद्य: एक प्रतिबंध या वरदान?

श्याम एस. सलीम

भारतीय मात्स्यिकी क्षेत्र, निर्यात के माध्यम से विदेशी मुद्रा आय का एक प्रमुख योगदानकर्ता है, ने वैश्विक समुद्री खाद्य निर्यात में एशियाई देशों के बीच एक प्रमुख भूमिका निभाता है। वर्ष 2017-18 में भारत ने 7.08 बिलियन अमेरिकी डॉलर सर्वोच्च उच्च स्तर के यानि 13.8 लाख टन (45,000 करोड़ रुपए) समुद्री खाद्य का निर्यात किया।

वर्ष 2008 के बाद से आर्थिक मंदी ने पूरे विश्व में मंदी का कारण बना, देश में फैली आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण गिरावट आई, जो सामान्य रूप से वास्तविक जीडीपी विकास, वास्तविक व्यक्तिगत आय, रोज़गार, व्यावसायिक उत्पादन और थोक व्यापार में दिखाई पड़ती है। चूँकि एशियाई आर्थिक संकट ने दुनिया भर में मात्स्यिकी और मात्स्यिकी से संबंधित व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव डाला था, मंदी के कारण अन्य क्षेत्रों की तरह समुद्री खाद्य के निर्यात वृद्धि दर में कमी का एक सहज भय था।

निर्यातकों, प्रसंस्करण कंपनियों और किसी भी प्रकार के मत्स्य विक्रेताओं को चरम बाजार मंदी का सामना करना पड़ा। उनकी वित्तीय स्थिति खराब हो गई, जिससे उत्पादन स्थानों में मत्स्य की कीमतों में तेज़ गिरावट आई। वैश्विक आर्थिक संकट के प्रादुर्भाव के बाद, विदेशी बाज़ारों में भारतीय मात्स्यिकी की माँग में अचानक गिरावट आई। भारतीय मत्स्य आयात की थोक कीमतें तेज़ी से गिरीं और इसका असर वेरावल के मत्स्यन उद्योग पर भी पड़ा। संयोग से, वेरावल में बड़ी संख्या में मत्स्य प्रसंस्करण फ़ैक्टरियाँ हैं, जहाँ से यूएसए, जापान, चीन, दक्षिण पूर्व एशिया, गल्फ और यूरोपीय देशों में उच्च गुणवत्ता वाले समुद्री खाद्य का निर्यात करते हैं।

> मंदी भारतीय निर्यात वृद्धि पर कोई बाधा नहीं डाला तथा पिछले दशक के दौरान निर्यात व्यापार निश्चित रूप से प्रति दिन 10-15 % बढ़ता रहा।

अध्ययन से पता चला कि, वैश्विक मंदी और आर्थिक मंदी के बीच भी इस क्षेत्र ने अच्छा प्रदर्शन किया। मंदी के पूर्व-बाद की अवधि में प्रशीतित श्रिम्प ने 3.15 प्रतिशत से लेकर 18.95 प्रतिशत तक के उच्चतम वृद्धि दर दर्ज की। वर्ष 2008 से, विश्व के आर्थिक मंदी के बीच में भी भारत विश्व के सबसे बड़ा श्रिम्प निर्यातक के रूप में बना रहा। मंदी भारतीय निर्यात वृद्धि पर कोई बाधा नहीं डाला तथा पिछले दशक के दौरान निर्यात व्यापार निश्चित रूप से प्रति दिन 10-15% बढ़ता रहा। इसके अलावा, मत्स्य निर्यात को विनियमित करने और मात्स्यिकी व्यापार और निर्यात की उच्च चिरस्थाईता सुनिश्चित करने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के एकीकरण के लिए एक वास्तविक समय मछली बाजार ग्रिड का विकास करने हेतु सरकारी हस्तक्षेप के लिए अध्ययन प्रारंभ किया गया।

प्रस्तावना

भारत वैश्विक समुद्री खाद्य निर्यात में एशियाई देशों के बीच एक प्रमुख भूमिका निभाता है। वर्ष 2017-18 में भारत से समुद्री उत्पादों का निर्यात 7.08 बिलियन यूएस डॉलर मूल्य के 13 लाख टन तक पहुँच गया और वर्ष 2007-08 से मूल्य के संदर्भ में 20 प्रतिशत की प्रभावशाली दोहरे अंक की वृद्धि दर दर्ज की गई।

भारत प्रशीतित श्रिम्प, स्क्विड और फिनफ़िश का निर्यात सूखे, जीवित और ठंडे रूपों में विभिन्न स्थानों पर करता है। प्रमुख समुद्री खाद्य बाजारों के मौजूदा माँग पैटर्न और प्रशीतित और प्रसंस्करण के लिए आधुनिक मशीनरी के साथ, कई निर्यातक फर्मों ने प्रसंस्कृत मूल्य वर्धित उत्पादों का विकास और निर्यात शुरू कर दिया है। निर्यात की गई विभिन्न प्रकार के मदों में से, प्रशीतित श्रिम्प और प्रशीतित फिनफ़िश ने भारत से समुद्री खाद्य निर्यात की कुल मात्रा का लगभग 75 प्रतिशत का हिसाब लगाया।

हालाँकि, एक वैश्विक आर्थिक मंदी, जिसे "महा मंदी" के रूप में जाना जाता है, वर्ष 2007 के दौरान दुनिया के लगभग सभी देशों को प्रभावित कर दिया। महा मंदी एक वैश्विक आर्थिक मंदी थी जिसने दुनिया को तबाह कर दिया था। इस संकट ने विश्वभर में घर बंधक मोचन-निषेध को बढ़ा दिया और इसके कारण लाखों लोग अपनी जीवन बचत, अपनी नौकरी और अपने घरों को खोया। यह आमतौर पर 1930 के दशक के महामंदी के बाद के आर्थिक गिरावट की

प्रधान वैज्ञानिक, सामाजिक आर्थिक मूल्यांकन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रभाग,
आईसीएआर-केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान, कोचीन | ईमेल: shyam.icar@gmail.com

Freight Brokers Global Services Inc.

C-TPAT
Customs-Trade Partnership Against Terrorism
BUILDING PARTNERSHIPS • PROTECTING FREEDOM

Looking to Export to the U.S.?

Let our dedicated team with decades of experience assist you

Full Service, Inter-Modal & LTL Trucking

FCL/LCL Ocean Freight

Domestic and International Air Freight

Full Service FDA Security & Compliance Consulting

NEW FOR 2019

Seafood Import Monitoring Program

Now offering 2019 record keeping for NOAA Compliance

Have FBGS be your U.S. team to keep your imports covered for all monitoring requirements

LET'S GET STARTED!

Call: 718.471.1299

Email: Info@FreightBrokersGlobal.com

1200 Brunswick Ave, Far Rockaway, NY 11691

www.FreightBrokersGlobal.com

सबसे लंबी अवधि माना जाता है। आर्थिक मंदी "देश भर में फैली आर्थिक गतिविधियों में भारी गिरावट, कुछ महीनों से अधिक समय तक चलने वाला है, आम तौर पर वास्तविक जीडीपी विकास, वास्तविक व्यक्तिगत आय, रोज़गार, व्यावसायिक उत्पादन और थोक-खुदरा बिक्री में दिखाई देता है'' (श्याम एस. सलीम, आर. नारायणकुमार, 2012)। एक मंदी आम तौर पर तब होती है जब उपभोक्ता अर्थव्यवस्था की वृद्धि में विश्वास खो देते हैं और कम खर्च करते हैं। इससे वस्तुओं और सेवाओं की माँग में कमी आ जाती है, जिसके कारण उत्पादन में कमी, बरख़ास्तगी और बेरोज़गारी में तेज वृद्धि होती है। स्टॉक मूल्य के गिरावट के डर के कारण निवेशक कम खर्च करते हैं और इस प्रकार शेयर बाजारों पर नकारात्मक भाव में गिरावट आते हैं।

भारत में मात्स्यिकी पर मंदी का प्रभाव

एशियाई आर्थिक संकट मात्स्यिकी और मात्स्यिकी से संबंधित व्यवसाय पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। घरेलू मत्स्य बाजारों में, मत्स्य उत्पादों की माँग में भारी गिरावट है। थोक और खुदरा कीमतें तेज़ी से गिर गईं। मुख्य रूप से एशियाई बाजारों के लिए भारतीय मत्स्य उत्पादों का निर्यात भारी मंदी में है। निर्यातकों, प्रसंस्करण कंपनियों, और किसी भी प्रकार के मत्स्या विक्रेता चरम बाजार मंदी से प्रभावित हैं। उनके आर्थिक स्थिति खराब हो जाते हैं, जो उत्पादन स्थानों में मत्स्य की कीमतों में तेज़ गिरावट का कारण बन जाता है। इसके अलावा मत्स्य व्यवसाय के ज़रिए मछुआरे और मत्स्या कृषक निवेश और संचालन के लिए पूँजी उठाने के लिए असमर्थ हो जाते हैं। चूँकि उत्पादक सामग्रियों की कीमतें बढ़ती हैं, इसलिए लाभ की दर घट जाती है। इस संकट से पहले, निर्यातकों को कम अतिरिक्त मूल्य वाले व्यापारिक उत्पादों के विस्तार से रोका गया। इसके विपरीत, घरेलू-उन्मुख उत्पादन अवसाद में रहा *(अपु दास, एट अल, .2012)*।

वर्ष 2006-07 में 612 हज़ार टन निर्यात किया गया और वर्ष 2007-08 में यह 541 हज़ार टन तक कम हो गया, यह मात्स्यिकी निर्यात पर हुए आर्थिक संकट के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।

हालाँकि, निर्यात में गिरावट या मंदी पूरी तरह से आर्थिक मंदी के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। वर्ष 2006-07 में 612 हज़ार टन निर्यात किया गया और वर्ष 2007-08 में यह 541 हज़ार टन तक कम हो गया, यह मात्स्यिकी निर्यात पर हुए आर्थिक संकट के नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है। वैश्विक आर्थिक संकट के फैलने के बाद, विदेशी बाजारों में भारतीय मात्स्यिकी की माँग में अचानक गिरावट आई है।

यह रिपोर्ट किया गया कि, यूरोपीय संघ में, भारतीय मत्स्य के थोक मूल्यों में तेज़ी से गिरावट हुई है। संग्राहकों को उनके लेन-देन का पैमाना और भारतीय मत्स्य/श्रिम्प के खरीद कीमतों को भी कम करना पड़ा। फार्म गेट की कीमत लगभग उच्चतम कीमत के आधी थी। इससे शिशु और तरुण मत्स्यों के पकड़ में लगे हुए छोटे पैमाने के मछुआरों को नुकसान हुआ (अप्पू दास, एट अल, 2012)।

शुरू में आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण समय में जीवित रहने के लिए बहुत दबाव था लेकिन अन्य विभिन्न कारकों के साथ मिलकर गुणवत्ता ने भारत के समुद्री खाद्य उद्योग को जीवित रहने में मदद की। जलकृषि उत्पादन में गिरावट और मत्स्य लैंडिंग में मंदी के बावजूद भी मुख्य रूप से इकाई मूल्य प्राप्ति के कारण डॉलर के संदर्भ में देश का निर्यात काफी बढ़ गया।

भले ही भारत में घरेलू मछली का विपणन बहुत तेजी से बढ़ रहा है और निर्यात का विरोधाभास भी विद्यमान है। इस क्षेत्र में मंदी के प्रभाव की बहुत बड़ी भूमिका है। मंदी के प्रभाव का आकलन भौगोलिक और वस्तु विविधीकरण के संदर्भ में मंदी के पूर्व और बाद के अवधि के दौरान हुए भारतीय समुद्री उत्पादों के निर्यात प्रदर्शन के संदर्भ में किया गया।

अध्ययन माध्यमिक डेटा पर आधारित है, जिसमें समुद्री मत्स्य लैंडिंग का विभिन्न प्रकाशित स्रोतों से, जैसेकि मात्स्यिकी सांख्यिकी पर एफ़एओ इयर बुक, भारत से समुद्री उत्पाद निर्यात के आँकड़े, समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए, कोचीन) वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रकाशित, राष्ट्रीय समुद्री जीवित संसाधन आंकड़ा केंद्र, केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान से प्राप्त है। अध्ययन वर्ष 1995 से 2017 तक के आंकड़ों के आधार पर आयोजित किया गया था।

यह अध्ययन मंदी के पूर्व और बाद के अवधि के माध्यम से आयोजित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। मूल्यांकन अर्थमितीय साधनों का उपयोग करके किया गया जिसमें विकास दर विश्लेषण, मंदी पूर्व और बाद के अवधि के दौरान समुद्री उत्पादों के निर्यात में प्रवृत्ति की पहचान करने की अस्थिरता भी शामिल थे। वस्तु-वार और बाजार-वार दोनों के लिए समुद्री उत्पादों का निर्यात प्रदर्शन को भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात में मंदी के प्रभाव का आकलन करने के लिए विश्लेषण किया गया है।

परिणाम और विचार-विमर्श

विभिन्न समय अवधि में निर्यात वृद्धि का आकलन वस्तु-वार और बाज़ार-वार किया गया और निम्नलिखित शीर्षकों के तहत परिणाम पर विचार-विमर्श किया गया।

समुद्री उत्पादों का निर्यात विकास - वस्तु-वार

वैश्विक समुद्री खाद्य व्यापार में निरंतर अनिश्चितताओं के समय में भी, एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में अपना स्थान बनाए

रखने में भारत सक्षम रहा है। विभिन्न स्थानों पर भारत से निर्यात की मात्रा का लगभग 99 प्रतिशत प्रशीतित रूप में भेजा जाता है।

तालिका 1 में, समुद्री उत्पादों के वस्तु -वार निर्यात यह संकेत देता है कि कुल निर्यात ने पूर्व-मंदी की अवधि (1995-2007) की तुलना में मंदी के बाद की अवधि (2008-2017) में बेहत्तर प्रदर्शन हुआ। मंदी के बाद की अवधि के दौरान कुलमिलाकर मात्रा की वृद्धि दर पूर्व-मंदी की अवधि में 4.98 से बढ़कर 7.84 प्रतिशत हो गई।

यह पाया गया कि डॉलर में इकाई मूल्य प्राप्त ने मंदी के पहले की अवधि के दौरान -0.66 प्रतिशत की नकारात्मक वृद्धि दर दर्ज की, मंदी के बाद की अवधि के दौरान 6.58 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर दिखाई गई। विभिन्न वस्तुओं में से, प्रशीतिति श्रिम्प ने मंदी के पूर्व की अवधि में मात्रा में 3.15 प्रतिशत से मंदी के बाद की अवधि में 18.95 की उच्चतम वृद्धि दर्ज की।

प्रशीतित श्रिम्प के महत्वपूर्ण वृद्धि का प्रमुख कारण वर्धित लैंडिंग, लगभग 70 प्रतिशत प्रशीतित श्रिम्प कृषि, उच्च मूल्य प्राप्ति और चौड़ी बाज़ार आदि ठहराया जा सकता है।

इसके अलावा, मंदी के पूर्व-बाद के अवधि के दौरान प्रशीतित फिनफ़िश (4.51 प्रतिशत से 1.51 प्रतिशत), प्रशीतित कट्टलफिश (3.98 प्रतिशत से 2.82 प्रतिशत), सूखी मद (9.90 प्रतिशत से 5.51 प्रतिशत), ठंडी मद (9.26 प्रतिशत से 1.80 प्रतिशत) और अन्य (19.45 प्रतिशत से 3.45 प्रतिशत) की वृद्धि दर में मात्रा मंद भारी गिरावट हुई है।

तालिका 1. समुद्री उत्पादों का वस्तु-वार निर्यात

वर्ष	मंदी-पूर्व (1995-2007)	मंदी के बाद (2008-2017)
कुल		
मात्रा टन में	4.98* (2.59)	7.84* (3.59)
मूल्य (करोड़)	6.49* (4.10)	20.71* (5.16)
दशलक्ष यू एस डॉलर	4.29* (3.02)	14.93* (4.15)
इकाई मूल्य (रु.)	1.43*** (0.91)	11.94* (3.43)
इकाई मूल्य (डॉ)	-0.66***(-0.53)	6.58* (2.74)
प्रशीतित श्रिम्प		
मात्रा टन में	3.51* (3.79)	18.95* (8.95)
मूल्य (करोड़)	4.37* (1.87)	28.47* (4.48)
दशलक्ष यू एस डॉलर	2.21* (2.32)	22.29* (4.06)
इकाई मूल्य (रु.)	0.83*** (0.39)	8.00* (1.94)
इकाई मूल्य (डॉ)	-1.26** (-0.96)	2.80*** (0.78)
प्रशीतित फिनफ़िश		
मात्रा टन में	4.51** (1.07)	1.51*** (0.37)
मूल्य (करोड़)	8.26* (1.99)	10.56* (2.55)
दशलक्ष यू एस डॉलर	6.04** (1.29)	5.29** (1.20)
इकाई मूल्य (रु.)	3.59* (3.06)	8.91* (3.16)
इकाई मूल्य (डॉ)	1.47*** (0.57)	3.72* (1.96)
प्रशीतित कट्टलफिश		
मात्रा टन में	3.98* (1.97)	2.82** (0.99)
मूल्य (करोड़)	9.57* (2.98)	11.73* (4.61)
दशलक्ष यू एस डॉलर	7.29* (1.54)	6.32* (1.76)
इकाई मूल्य (रु.)	5.37* (3.09)	8.66* (2.63)
इकाई मूल्य (डॉ)	3.18** (0.97)	3.40***(0.77)

प्रशीतित स्क्विड		
मात्रा टन में	1.12*** (0.44)	4.95* (1.47)
मूल्य (करोड़)	5.76* (2.16)	16.23* (3.04)
दशलक्ष यू एस डॉलर	3.55** (1.00)	10.45* (1.84)
इकाई मूल्य (रु.)	4.59* (5.69)	10.76* (3.34)
इकाई मूल्य (डॉ)	2.40** (1.18)	5.25* (1.62)
सूखी मद		
मात्रा टन में	9.90* (1.87)	5.51*** (0.72)
मूल्य (करोड़)	17.26* (3.99)	4.91*** (0.67)
दशलक्ष यू एस डॉलर	14.87* (2.63)	1.66*** (0.22)
इकाई मूल्य (रु.)	6.70* (1.79)	-0.57***(-0.10)
इकाई मूल्य (डॉ)	4.52** (1.28)	-3.65***(-0.63)
जीवित मद		
मात्रा टन में	3.19* (1.61)	5.65* (1.48)
मूल्य (करोड़)	8.18* (3.18)	15.13* (3.02)
दशलक्ष यू एस डॉलर	5.97* (2.44)	9.70* (2.59)
इकाई मूल्य (रु.)	4.84* (2.03)	8.97* (1.53)
इकाई मूल्य (डॉ)	2.69* (1.75)	3.84*** (0.84)
ठंडी मद		
मात्रा टन में	9.26* (2.48)	1.80*** (0.32)
मूल्य (करोड़)	13.93* (3.10)	16.18* (3.03)
दशलक्ष यू एस डॉलर	11.66* (2.55)	10.61* (2.56)
इकाई मूल्य (रु.)	4.27* (1.53)	14.12* (2.84)
इकाई मूल्य (डॉ)	2.20** (1.09)	8.65* (1.79)
अन्य		
मात्रा टन में	19.45* (6.13)	7.94* (3.00)
मूल्य (करोड़)	19.39* (6.81)	12.30* (3.90)
दशलक्ष यू एस डॉलर	16.96* (6.40)	6.57* (1.82)
इकाई मूल्य (रु.)	-0.05***(-0.03)	4.04* (1.69)
इकाई मूल्य (डॉ)	-2.09***(-0.78)	-1.27***(-0.68)

* महत्वपूर्ण स्तर क्रमशः यदि पी मूल्य <0.05 है, ** यदि पी मूल्य <0.01 है और *** यदि पी मूल्य <0.001 को सूचित करता है।

समुद्री उत्पाद निर्यात बाज़ार वार

मंदी के बाद की अवधि के दौरान के समुद्री उत्पादों का निर्यात (2008-2017) के बाजार-वार विश्लेषण के मामले में मात्रा, मूल्य, मूल्य डॉलर में, इकाई मूल्य और डॉलर में इकाई मूल्य ने क्रमशः 8.60,23.06, 16.72,13.32 और 7.48 प्रतिशत के साथ प्रभावशाली वृद्धि दिखाई। संयुक्त राज्य अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया ने क्रमशः मात्रा और मूल्य के मामले में समुद्री उत्पादों के निर्यात में अपना उच्चतम स्थान बनाए रखा। मंदी के पूर्व के अवधि के दौरान, जापान को दूसरे स्थान पर करते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका भारतीय समुद्री उत्पादों के प्रमुख खरीदार के रूप में उभरा।

दक्षिण पूर्व एशिया ने भी मूल्य और मात्रा के संदर्भ में मंदी के बाद की अवधि में महत्वपूर्ण उच्च विकास दर दर्ज की और इकाई मूल्य प्राप्ति में 2.96 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

यूरोपीय संघ में मात्रा में गिरावट पर भी उच्च निर्यात मूल्य और इकाई मूल्य प्राप्ति ने प्रीमियम उत्पादों के लिए गुणवत्ता चेतना और उच्च मूल्य का संकेत दिया। सामान्य तौर पर, निर्यात वृद्धि के विश्लेषण से पता चला है कि वस्तुओं के निर्यात और विविधीकरण में काफी वृद्धि हुई है और बाजार की मंदी ने भारत से निर्यात में कोई आघात नहीं पहुँचाया। नीचे दी गई तालिका 2 में भारतीय समुद्री उत्पादों की बाजार वार निर्यात वृद्धि का संकेत दिया गया है।

तालिका 2. भारतीय समुद्री उत्पादों का निर्यात विकास (बाजार वार)

वर्ष	मंदी-पूर्व (1995-2007)	मंदी के बाद (2008-2017)
कुल		
मात्रा टन में	4.98* (2.59)	8.60* (2.87)
मूल्य (करोड़)	6.49* (4.10)	23.06* (5.22)
दशलक्ष यू एस डॉलर	4.29* (3.02)	16.72* (3.89)
इकाई मूल्य (रु.)	1.13*** (0.63)	13.32* (3.61)
इकाई मूल्य (डॉ)	-0.66***(-0.53)	7.48* (2.82)
जापान		
मात्रा टन में	-0.09***(-0.04)	3.73** (1.27)
मूल्य (करोड़)	-5.22* (-1.50)	11.97* (2.97)
दशलक्ष यू एस डॉलर	-7.18***(-2.41)	5.97** (1.35)
इकाई मूल्य (रु.)	-5.13* (-2.32)	7.94* (2.34)
इकाई मूल्य (डॉ)	-7.10* (-4.89)	2.16*** (0.77)
यूएसए		
मात्रा टन में	12.10* (1.79)	42.03* (4.83)
मूल्य (करोड़)	9.76* (1.92)	34.74* (4.09)
दशलक्ष यू एस डॉलर	1.46*** (0.41)	27.28* (5.36)
इकाई मूल्य (रु.)	-2.09** (-1.23)	-5.12* (-3.38)
इकाई मूल्य (डॉ)	-9.49* (-3.14)	-14.81**(-1.77)
यूरोपियन संघ		
मात्रा टन में	9.22** (9.22)	2.53* (1.63)
मूल्य (करोड़)	13.88* (2.87)	13.64* (4.13)
दशलक्ष यू एस डॉलर	11.52* (2.04)	7.76* (2.97)
इकाई मूल्य (रु.)	4.27* (5.03)	10.84* (3.58)
इकाई मूल्य (डॉ)	2.11* (1.34)	5.10* (1.98)
चीन		
मात्रा टन में	3.38*** (0.66)	-14.78* (-4.05)
मूल्य (करोड़)	8.11* (1.58)	-1.08***(-0.22)
दशलक्ष यू एस डॉलर	5.95** (1.20)	-6.06** (-1.21)
इकाई मूल्य (रु.)	4.57* (2.18)	16.08* (5.27)
इकाई मूल्य (डॉ)	2.48*** (0.87)	10.23* (3.88)
दक्षिण पूर्व एशिया		
मात्रा टन में	5.83* (1.73)	20.79 * (2.03)
मूल्य (करोड़)	8.23* (2.77)	38.41* (3.65)
दशलक्ष यू एस डॉलर	5.99* (2.51)	31.33* (2.96)

इकाई मूल्य (रु.)	2.26 *** (0.64)	14.58* (2.86)
इकाई मूल्य (डॉ)	0.15 *** (0.06)	8.72* (2.52)
मध्य पूर्व		
मात्रा टन में	7.15* (1.98)	10.16* (2.33)
मूल्य (करोड़)	14.60* (3.86)	21.62* (3.77)
दशलक्ष यू एस डॉलर	12.23* (3.01)	15.48* (3.05)
इकाई मूल्य (रु.)	6.95* (3.44)	10.41* (2.23)
इकाई मूल्य (डॉ)	4.74* (1.54)	4.83** (1.21)
अन्य		
मात्रा टन में	13.62* (4.07)	4.37** (1.04)
मूल्य (करोड़)	21.46* (11.25)	18.29* (2.97)
दशलक्ष यू एस डॉलर	18.96* (6.16)	12.25* (2.29)
इकाई मूल्य (रु.)	6.90* (2.61)	13.34* (2.94)
इकाई मूल्य (डॉ)	4.70* (2.40)	7.56* (1.79)

* महत्वपूर्ण स्तर क्रमशः यदि पी मूल्य <0.05 है, ** यदि पी मूल्य <0.01 है और *** यदि पी मूल्य <0.001 को सूचित करता है।

भारतीय समुद्री उत्पादों की निर्यात अस्थिरता: वस्तु-वार

मंदी के पूर्व की अवधि के दौरान एक बाजार का निर्यात प्रदर्शन मात्रा, मूल्य और इकाई मूल्य में वृद्धि के दृष्टिकोण के अलावा परिवर्तनशीलता या उतार-चढ़ाव की सीमा के आधार पर भी मापा गया। तालिका 3 के परिणामों का संकेत यह है कि मूल्य और इकाई मूल्य के संदर्भ में 15.97 प्रतिशत के साथ मंदी पूर्व अवधि के दौरान मात्रा में अस्थिरता की मात्रा अधिक स्पष्ट थी भले ही इसमें अधिक विकास जुड़ा था, लेकिन अस्थिरता की मात्रा में मंदी पूर्व-बाद के समय में क्रमशः 11.53 प्रतिशत से 15.58 प्रतिशत तक और 8.28 प्रतिशत से 13.78 प्रतिशत तक वृद्धि हुई।

तालिका 3. भारतीय समुद्री उत्पादों के निर्यात की अस्थिरता सूचकांक (वस्तु-वार)

विवरण	मंदी पूर्व (1995-2007)	मंदी के बाद (2008-2017)
कुल		
मूल्य (करोड़)	15.97	8.77
दशलक्ष यू एस डॉलर	11.53	15.58
इकाई मूल्य (रु.)	8.28	13.78
इकाई मूल्य (डॉ)	10.78	16.73
प्रशीतित श्रिम्प		
मात्रा टन में	5.76	11.28
मूल्य (करोड़)	11.23	25.19
दशलक्ष यू एस डॉलर	12.45	16.68
इकाई मूल्य (रु.)	8.69	26.48
प्रशीतित फिनफिश		
मात्रा टन में	37.91	16.41
मूल्य (करोड़)	33.40	16.92
दशलक्ष यू एस डॉलर	7.43	14.94
इकाई मूल्य (रु.)	32.93	17.20

प्रशीतित कट्टलफिश		
मात्रा टन में	14.12	14.23
मूल्य (करोड़)	17.27	13.09
दशलक्ष यू एस डॉलर	8.98	15.66
इकाई मूल्य (रु.)	20.01	18.86
प्रशीतित स्क्विड		
मात्रा टन में	14.90	23.16
मूल्य (करोड़)	15.75	28.95
इकाई मूल्य	6.92	16.01
इकाई मूल्य (डॉ)	16.14	29.04
सूखी मदें		
मात्रा टन में	33.08	39.43
मूल्य (करोड़)	26.09	48.29
इकाई मूल्य	27.70	32.39
इकाई मूल्य (डॉ)	29.49	53.75
जीवित मद		
मात्रा टन में	16.49	20.16
मूल्य (करोड़)	23.19	24.59
इकाई मूल्य	12.49	21.54
इकाई मूल्य (डॉ)	19.61	19.48
ठंडी मदें		
मात्रा टन में	35.15	57.87
मूल्य (करोड़)	41.26	27.30
इकाई मूल्य	15.76	35.16
इकाई मूल्य (डॉ)	45.30	22.32
अन्य		
मात्रा टन में	14.56	11.18
मूल्य (करोड़)	17.54	17.41
इकाई मूल्य	11.28	12.43
इकाई मूल्य (डॉ)	18.26	20.51

* महत्वपूर्ण स्तर क्रमशः यदि पी मूल्य <0.05 है, ** यदि पी मूल्य <0.01 है और *** यदि पी मूल्य <0.001 को सूचित करता है।

मंदी पूर्वकी अवधि (5.76 प्रतिशत) की तुलना में मंदी पूर्व के दौरान प्रशीतित श्रिम्प ने उच्च निर्यात मात्रा भिन्नता (11.28 प्रतिशत) दर्ज की, यह सुझाव देते हुए कि विभिन्न निर्यातकों के बीच गंभीर प्रतिस्पर्धा मौजूद है और निर्यात कीमतों के लिए यह बहुत उत्तरदायी हैं। इसके अलावा, खरीदारों के बाजार की अनिवार्यता और आयातकों की कम संख्या ने उच्च अस्थिरता का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रशीतित श्रिम्प के अस्थिरता व्यवहार के विरुद्ध, प्रशीतित स्क्विड, प्रशीतित कट्टलफिश और प्रशीतित फिनफिश के संबंध में, निर्यात मात्रा भिन्नता की एक कम मात्रा मौजूद थी। यूरोपीय संघ डोमेन का चौड़ीकरण और दक्षिण पूर्व

एशियाई देशों के साथ व्यापार कम अस्थिरता उत्पन्न करने में सहायक रहा। विश्लेषण ने वस्तुओं के विविधीकरण की आवश्यकता का सुझाव दिया, जो अस्थिरता की मात्रा को कम करेगा।

भारतीय समुद्री उत्पादों की निर्यात अस्थिरता: बाजार-वार

भारतीय समुद्री उत्पादों की बाजार-वार अस्थिरता विश्लेषण के परिणाम तालिका 4 में दर्शाए गए हैं और यह पता चलता है कि पूर्व मंदी अवधि (11.53 प्रतिशत) की तुलना में मंदी के बाद की अवधि मूल्य (17.19 प्रतिशत) के मामले में अस्थिरता की एक उच्च मात्रा को दिखाती है। जबकि पूर्व मंदी अवधि (15.97 प्रतिशत) की तुलना में मंदी के बाद की अवधि (12.79 प्रतिशत) ने निर्यात की मात्रा में अस्थिरता कम दिखाई, जो निर्यात की मात्रा मूल्य से अधिक स्थिर थी को इंगित करता है। इनमें से, मंदी ने भारतीय समुद्री उत्पादों के निर्यात की मात्रा को प्रभावित नहीं किया।

मात्रा और मूल्य में अस्थिरता सूचकांक द्वारा इंगित के अनुसार यूएसए पूर्व मंदी की अवधि के दौरान एक स्थिर बाजार रहा, जो इकाई मूल्य को छोडकर मंदी के बाद की अवधि के दौरान मात्रा, मूल्य के लिए कम अस्थिर हो गया। दूसरी तरफ जापान, अन्य सभी निर्यात मापदंडों को छोड़कर मंदी के बाद की अवधि के दौरान मूल्य के मामले में कम अस्थिर हो गया।

निर्यात की अस्थिरता में जिन प्रमुख बाजारों में काफी कमी आई है, वे इकाई मूल्य को छोड़कर सभी निर्यात मापदंडों में यूरोपीय संघ, चीन और मध्य पूर्व के थे। दक्षिण पूर्व एशिया ने सभी निर्यात मापदंडों में एक महत्वपूर्ण वृद्धि उत्पन्न की थी जिससे अस्थिरता की मात्रा में एक खतरनाक वृद्धि तक ले जाया गया।

तालिका 4. भारतीय समुद्री उत्पादों की निर्यात अस्थिरता: बाजार-वार

वर्ष	मंदी पूर्व (1995-2007)	मंदी के बाद 2008-2017)
कुल		
मात्रा टनों में	15.97	12.79
मूल्य (करोड़)	11.53	17.19
इकाई मूल्य	8.28	13.27
इकाई मूल्य (डॉ)	10.78	19.25
जापान		
मात्रा टनों में	11.10	12.52
मूल्य (करोड़)	18.46	14.97
इकाई मूल्य	11.57	12.21
इकाई मूल्य (डॉ)	17.27	18.81
यूएसए		
मात्रा टनों में	24.80	30.79
मूल्य (करोड़)	21.49	34.17
इकाई मूल्य	7.13	6.16
इकाई मूल्य (डॉ)	13.04	12.29
यूरोपीय संघ		
मात्रा टनों में	31.89	5.61
मूल्य (करोड़)	31.67	11.75
इकाई मूल्य	6.01	10.45
इकाई मूल्य (डॉ)	30.87	12.44
चीन		
मात्रा टनों में	50.63	23.66

मूल्य (करोड़)	42.61	26.64
इकाई मूल्य	13.08	14.29
इकाई मूल्य (डॉ)	41.92	25.74
दक्षिण पूर्व एशिया		
मात्रा टनों में	22.56	29.97
मूल्य (करोड़)	15.78	32.64
इकाई मूल्य	20.97	18.93
इकाई मूल्य (डॉ)	15.47	34.19
मध्य पूर्व		
मात्रा टनों में	27.41	17.66
मूल्य (करोड़)	35.02	14.34
इकाई मूल्य	16.59	16.83
इकाई मूल्य (डॉ)	37.56	14.01
अन्य		
मात्रा टनों में	16.79	24.05
मूल्य (करोड़)	13.02	19.71
इकाई मूल्य	11.06	23.47
इकाई मूल्य (डॉ)	12.22	20.20

मंदी के प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि मंदी से भारत के समुद्री खाद्य व्यापार पर कोई असर नहीं पड़ा है। इसके प्रमुख कारण भारत की आर्थिक उत्तेजना, बैंकिंग प्रणाली की मजबूती और विकसित देशों की आर्थिक स्थिति थी। जबकि क्रय शक्ति और रोजगार दर लगभग दोहरे अंकों में घट गई, रिटेलिंग की मांग बढ़ी और रेडी टु सर्व तथा रेडी टु कुक की मांग कम हो गयी। बड़े पैमाने पर आर्थिक उत्तेजना के बीच खाद्य स्टैम्पों की मांग (अमेरिका और यूरोपीय संघ सहित विकसित देशों में पीडीएस में वृद्धि) बड़े पैमाने पर भारतीय आयातों के लिए अतिरिक्त मांग प्रदान की।

मजबूत चीनी युआन और अधिक उत्पादकता और दक्षिण पूर्व एशियाई में सरकारी विनियमन अप्रभावित रहे। भारतीय समुद्री खाद्य का निर्यात खुदरा दुकानों से मूल्यवर्धित उत्पादों के बजाय कच्ची मत्स्य की बढ़ती मांग के कारण प्रभावित नहीं हुआ, जिससे खरीदार देशों में वैश्विक बाजार में अंतरराष्ट्रीय बाजार में 10 प्रतिशत से अधिक की गिरावट हुई। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वर्ष 2007 से शुरू हुई मंदी की अवधि के दौरान मत्स्य उत्पादों का निर्यात बढ़ोत्तरी पर है। निर्यात वर्ष 2007-08 में 541.7 मिलियन डॉलर से बढ़कर वर्ष 2012-13 में 928.45 मिलियन डॉलर तक हो गया। भारत ने वर्ष 2017-18 में 9.45 मिलियन टन और 4.69 बिलियन डॉलर के मुकाबले वर्ष 2017-18 में 7.08 बिलियन डॉलर (45000 करोड़ रुपये) के उच्च मूल्य के 13 लाख मीट्रिक टन समुद्री खाद्य का निर्यात किया। यूएसए और दक्षिण पूर्व एशिया के प्रमुख आयातक बने रहे, जबकि अवधि के दौरान यूरोपीय संघ (ईयू) से माँग की काफी वृद्धि हुई।

सीखे गए महत्वपूर्ण पाठों में से एक आत्मनिर्भर होना है। भले ही विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) मुक्त व्यापार का प्रचार करता है, भारत को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मंदी को प्रभावित करने से रोकने के लिए अर्थव्यवस्था में सुरक्षात्मक उपाय अपनाने चाहिए। मंदी की स्थिति में, यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि कुछ उच्च मूल्य की मत्स्यों ने घरेलू बाजार में भी प्रीमियम मूल्य प्राप्त की हैं। वैश्विक संकटों से अमेरिका और यूरोपीय संघ की अर्थव्यवस्थाओं की कम माँग के कारण वर्ष 2008 में देश के निर्यात में तेज़ी से गिरावट दर्ज की। निर्यात बाजार अस्वीकृति और कम कीमत के जोखिम और विदेशी मुद्रा मूल्यों में पारगमन या भिन्नता में क्षति का नुकसान के मामले में उच्च जोखिम के अधीन हो जाते हैं। असफलता का अनुभव झटके को भविष्य में केवल एक बेहत्तर रूप से विकसित आंतरिक विपणन प्रणाली द्वारा कम किया जा सकता है।

इसके अलावा, एल. वन्नामी कृषि का विस्तार हाल के वर्षों में तेज़ी से हुआ है, इसने पैदावार श्रिम्प के मूल्य को कम कर दिया है। हाल ही में दुनिया भर में उद्योग का एकीकरण,

संस्कृति प्रणाली के भीतर ट्रेसबिलिटी और नियंत्रण के लिए बढ़ती आवश्यकता के जवाब में रुझान रहा है। कैप्चर मात्स्यिकी रुक जाने के कारण वैश्विक बाज़ार में श्रिम्प की माँग बढ़ रही है और लोग स्वस्थ खाद्य विकल्पों के प्रति अधिक समृद्ध और सचेत हो गए हैं।

बढ़ी हुई माँग के बावजूद भी, एल. वन्नामी की कीमत में लगातार गिरावट आ रही है। भविष्य में, मुख्य रूप से निर्यात बाजारों की संतृप्ति और विश्व आर्थिक विकास में कमी, साथ ही श्रिम्प व्यापार में गैर-टैरिफ बाधाओं का उद्भव के कारण एल. वन्नामी की बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक होने की उम्मीद है।

इसके अतिरिक्त, उद्योग को रासायनिक अवशेषों, खाद्य सुरक्षा और प्रमाणन, ट्रेसबिलिटी इको-लेबलिंग और पर्यावरणीय स्थिरता पर देशों की आवश्यकताओं को समायोजित करने की आवश्यकता होगी।

जलकृषि श्रिम्प एक जिम्मेदार, ट्रेस करने योग्य और कम प्रभाव वाले तरीके से, जो जैव विविधता को बढ़ा सकता है, और लागत कुशल तरीके से श्रिम्प का उत्पादन करते समय पर्यावरण की रक्षा करने में मदद कर सकता है, की आवश्यकता में वृद्धि के बारे में कृषकों को धीरे-धीरे पता चल रहा है।

नव विकसित गहन जीवाणु प्रवाह और सुपर-गहन प्रणाली, बेहतर प्रबंधन अभ्यास, प्रसंस्करण इकाइयों में एचएसीसीपी में इन सभी चिंताओं को दूर करने की क्षमता रखती है और इसकी गहनता से जाँच की जानी चाहिए। श्रिम्प कृषि को एक लंबी अवधि तक जारी रखने के लिए और जटिल निर्यात बाजारों के पूरक के लिए घरेलू उपभोग को बढ़ाया जाना चाहिए।

क्लैम में हेपेटोपैन्क्रियाज पर प्रचलित गलत धारणाएँ

सेतुलक्ष्मी सी. एस., अंजु ए. वी., निकिता गोपाल, बिन्दु जे. और श्रीजित एस

'क्लैम', द्विकपाटी मोलस्क की श्रेणी का एक सामान्य शब्द है, जिसमें दो खोल (कवच) होती हैं जोकि समीपकक्षी पेशियाँ और एक शक्तिशाली बिल पैर से जुड़ी होती है। वे जला निकायों के मैला और रेतीले तल पर रहते हैं और अपने पेशीय पैर का उपयोग करके चलते हैं। क्लैम का कोई सिर और काटने वाले मुँह के हिस्से नहीं होते हैं। मुँह के द्वार से पेट तक एक छोटा ग्रास नली होता है, जो कई छिद्रों वाला एक खोखला चैम्बर थैली है। वे जल के फाइटोप्लांकटन और शैवाल पर खिला फिल्टर फीडर हैं।

चारा लेते समय वे रेत और मिट्टी के कणों को भी खा लेते हैं। पेट, पाचन ग्रंथि से घिरा हुआ होता है, ऊतक का एक काला द्रव्यमान जिसे अक्सर "हेपेटोपैंक्रियास" कहा जाता है। इस पाचन ग्रंथि को अक्सर गलत समझा जाता है क्योंकि जीव के शरीर के उस हिस्से में मल अवशेष बचता है और आम तौर पर ज्यादातर उपभोक्ताओं द्वारा खाना पकाने से पहले क्लैम के मांस में काले हिस्से को दबाया और हटा दिया जाता है। वास्तव में, यह द्विकपाटी में अंतःकोशिकीय पाचन का एक महत्वपूर्ण स्थल है और इन बनावट के भीतर इंट्रासेल्युलर पाचन और अवशोषण के लिए ग्रंथि में प्रवेश के साथ एक निरंतर दो-तरफ़ा प्रवाह होता है और अपशिष्ट पेट, आंत और अंत में गुदा से बहिर्भाग तक जाता है। ग्रंथि का गहरा रंग पिगमेंटेड के कारण रिक्तिका की उपस्थिति होती है।

आईसीएआर-सीआईएफटी, कोचीन द्वारा एक परियोजना के हिस्से के रूप में केरल के अलाप्पुझा जिले के पेरुंबलम गांव में एक हस्तक्षेप किया गया। यह गाँव वेम्बनाड झील पर स्थित एक द्वीप है और यहाँ के लगभग 250 मछुआरों की महत्वपूर्ण आजीविका है, काला क्लैम मत्स्यन। द्वीप पर प्रक्रिया श्रृंखला में महत्वपूर्ण गतिविधियाँ जैसेकि एक डिप्रेशन सुविधा, स्टीमिंग और भूसी हटाने वाला उपकरण; और एक यांत्रिक मांस खोल विभाजक सहित एक क्लैम प्रोसेसिंग सुविधा स्थापित की गई है।

भूसी हटाए, साफ, सुरक्षित क्लैम को पैक, संग्रहीत और विपणन किया जा सकता है। चूँकि क्लैम को शुद्ध किया जाता है, उत्पाद के पाचन तंत्र में ग्रिट और अन्य अवशेष नहीं होते हैं। हालांकि, जब परीक्षण विपणन किया गया था, क्लैम के 'काले हिस्से' के बारे में कुछ संदेह आए थे। उपभोक्ता पूर्ण रूप में उत्पाद को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे और फिर भी ज़ोर दिया कि खाना पकाने से पहले इस हिस्से को हटा दिया जाए।

इस दृश्य के कारणों का आकलन करने के लिए, 90 उत्तरदाताओं (पेरुंबलम से 30 क्लैम मछुआरे, पेरुंबलम के

आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान, कोचीन

30 उपभोक्ता, और द्वीप के बाहर के 30 उपभोक्ता) के बीच एक शीघ्र दृश्य संवेदना सर्वेक्षण किया गया और उनकी राय का आकलन किया कि खाना पकाने और उपभोग से पहले उस हिस्से को बरकरार रखा जा सकता है या नहीं।

सर्वेक्षण में पता चला कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने क्लैम के हेपेटोपैंक्रियास को मल पदार्थ (41%) के रूप में पहचाना। उनमें से कुछ ने सोचा कि यह मिट्टी और रेत (31%), आंत (13%), अंडा (6%), वसा (4%) या कैल्शियम (4%) था। द्वीप के बाहर के लगभग 60% उपभोक्ता और द्वीप के उपभोक्ताओं के 40% ने सोचा कि यह मलीय पदार्थ है। पेरुंबलम द्वीप के 23% क्लैम मछुआरों ने भी ऐसा सोचा था। इसका मुख्य कारण ग्रंथि का काला रंग था। एक अन्य प्रमुख धारणा यह थी कि यह मिट्टी और रेत की सामग्री थी, जिसका कारण यह है कि चूँकि क्लैम मिट्टी में दफन एक नितलीय जीव है, इसलिए वे अक्सर पानी में प्लवक के साथ मिट्टी और रेत को निगलते हैं। क्लैम उपभोक्ताओं में से अधिकांश (73%) खाना पकाने से पहले ग्रंथि को निकालना पसंद करते हैं। द्वीप के बाहर के लगभग 90% क्लैम उपभोक्ता खाना पकाने से पहले इन ग्रंथियों को हटा देते हैं, उनका विश्वास है कि यह जठरांत्र संबंधी समस्याओं का कारण बनेंगे। उपभोक्ता, ज्यादातर पेरुंबलम के मछुआरे, जिन्होंने खाना पकाने से पहले इस ग्रंथि को कभी नहीं हटाया, ग्रंथियों के साथ क्लैम का सेवन करने से उन्हें किसी भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। यह आवश्यक है कि उपभोक्ताओं के बीच इस पहलू पर जागरूकता पैदा की जाए ताकि गलतफहमी दूर हो जाए। जबकि अशुद्ध क्लैम में ग्रिट होने की संभावना है, प्रतिक्षेपित क्लैम इस से मुक्त है और खपत के लिए सुरक्षित है।

संदर्भ

गोसलिंग, ई. 2008. द्विकपाटी मोलस्क: जीवविज्ञान, पारिस्थितिकी और संस्कृति। जॉन विले एंड संस। पृष्ठ. 456।

मॉर्टन, बी. 1983. फीडिंग एंड डाईजेशन इन बिलाल्विया: मोलस्का। अंक 5: फिजियोलॉजी, भाग 2 (ए. एस. एम. सेलुद्दीन और के. एम. विलबर, एड्स.), अकादमिक प्रेस, न्यूयॉर्क, पृष्ठ सं. 65-147

गोपाल, एन., जयंती, पी. और चंद्रशेखर, वी. 2014. पेरुम्बलम द्वीप, अलाप्पुझा जिला, केरल में काले क्लैम (विल्लोरिटा साइप्रिनोइड्स) का उत्पादन और विपणन। भारतीय जे. मत्स्य, 61 (4): 85-90।

KOBELCO
KOBE STEEL GROUP

KOBELCO Two Stage Inverter Drive Compressor

Best way to reduce the factory running cost !

Outstanding energy saving performance by
Kobelco inverter drive compressor

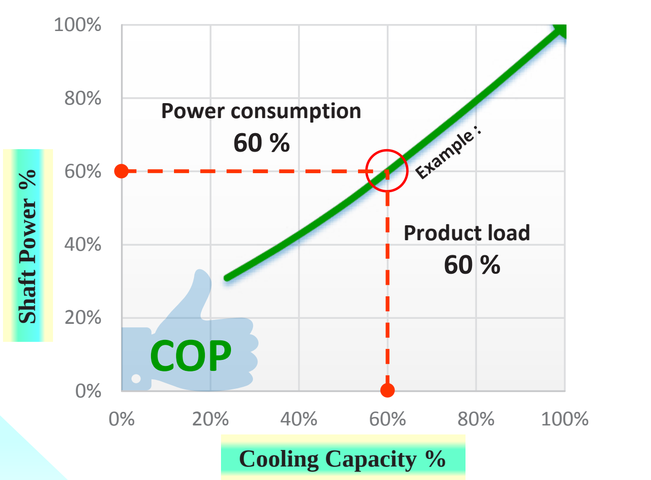

● : Above graph for iZN 20TXII-4A @ ET=-45 / CT=40 °C
● : Cooling capacity = 302.5 Kw @ -45 °C

Kobelco iZ Series –
Cooling capacity control by inverter & iZ controller
Result: Linear capacity control No Gas By-pass

iZN series for NH3
ET Range -30 °C to -50 °C

iZα series for F-Gas
ET Range -30 °C to -65 °C

Patent Registered....
Motor speed accelerates according to evaporate temperature drop
20% more Qo (kW) than the same frame model at lower than -30°C

Kobelco Compressors India Pvt Ltd.
249 G, 3rd Floor, AIHP Tower Udyog Vihar, Phase 4 Near India
Bulls Building. Gurgaon – 122015, Haryana
Tel : +91 124 – 4380750 / M : +91 - 7838015982
Email Id : singh.mandeep@Kobelco.com
Web : www.kobelco-comp.co.jp

अप्रैल 2019 के दौरान भारत के चयनित बंदरगाहों में समुद्री मत्स्य की लैंडिंग की मुख्य विशेषताएँ

अफसल वी. वी., एन.जे. नीतु और जोइस वी. तोमस
नेटफिश-एमपीईडीए

नेटफिश, एमपीईडीए की एक विस्तारण शाखा, भारत के प्रमुख बंदरगाह पर होने वाली नाव आगमन और समुद्री मत्स्य लैंडिंग का रिकॉर्ड रखते हैं। इस रिपोर्ट में अप्रैल 2019 के दौरान प्राप्त बंदरगाह डेटा के विश्लेषण परिणामों का वर्णन किया गया है।

डेटा संग्रह और विश्लेषण

भारत के नौ समुद्री राज्यों के चयनित बंदरगाह पर तैनात हार्बर आंकड़ा संग्रहकों द्वारा दिन-प्रतिदिन के आधार पर मत्स्य पकड़ और नाव आगमन के आंकड़े प्राप्त किए जाते हैं (तालिका 1 देखें)। बन्दरगाहों पर पहुँचे मत्स्यन यानों का नाम, पंजीकरण संख्या और प्रकार के साथ-साथ बंदरगाह पर उतरे प्रमुख मत्स्य वस्तुओं की अनुमानित मात्रा प्राथमिक और माध्यमिक मोड द्वारा दर्ज किए गए। प्रजाति-वार, क्षेत्र-वार, राज्य-वार और हार्बर-वार अनुमानों पर पहुंचने के लिए ऑनलाइन अनुप्रयोगों और एमएस ऑफिस (एक्सेल) टूल का उपयोग करके आंकड़े का विश्लेषण किया गया। अप्रैल 2019 के दौरान, 9 समुद्री तटीय राज्यों के 44 बंदरगाहों का आँकड़ा प्राप्त किए गए, जिसका विश्लेषण इस रिपोर्ट केलिए किया गया।

तालिका 1. डेटा संग्रह के लिए चयनित लैंडिंग साइटों की सूची

क्रम सं.	राज्य	मत्स्यन बन्दरगाह
1	पश्चिम बंगाल	देशप्राण
2		नमखाना
3		रैढिगी
4		दिघा (शंकरपुर)
5	ओड़ीशा	पारदीप
6		बलरामगडी
7		बहाबलपुर
8		ढामरा
9	आंध्र प्रदेश	विशाखपट्टिनम
10		निज़ामपट्टिनम
11		मछलीपट्टिणम
12		काक्किनाड़ा
13	तमिल नाडु	नागपट्टिनम
14		कारैक्कल
15		चेन्नई
16		पषईयार
17		कडलूर
18		पॉण्डिचेरी
19		चिन्नमुट्टम
20		मंडपम
21		तूत्तिकोरिन
22		कोलच्चल
23	केरल	तोप्पुंपड़ी
24		विषिंजम
25		तोट्टप्पल्ली
26		कायमकुलम
27		बेपोर
28		शक्तिकुलंगरा
29		मुनंबम
30		पुतियाप्पा
31	कर्नाटक	तद्री
32		मंगलोर
33		होन्नावर
34		मालपे
35		गंगोली

36	गोआ	कटबोना
37		मालिम
38	महाराष्ट्र	रत्नागिरी (मिरकरवाड़ा)
39		ससून डॉक
40		हर्णे
41	गुजरात	वेरावल
42		मंगरोल
43		पोरबंदर

मत्स्य लैंडिंग पर अनुमान

अप्रैल 2019 के दौरान 43 लैंडिंग स्थानों से कुल 50678.31 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों की लैंडिंग दर्ज की गई, जिसमें 19289.46 टन (38 प्रतिशत) डेमेर्सल फिनफिश, 16788.53 टन (33 प्रतिशत) शेलफिश और 14600.32 टन (30 प्रतिशत) पेलाजिक फिनफिश संसाधन शामिल थे (चित्र 1)। शेलफिश लैंडिंग में 68 प्रतिशत मोलस्क और 32 प्रतिशत क्रस्टेशियंस शामिल थे।

कुल पकड़ में 116 प्रकार के मत्स्य मद शामिल थे, जिनमें से शीर्ष पांच योगदानकर्ता थे स्क्विड, जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम, रेड-टूथ्ड फ़ाइलफिश, रिबन फिश और इंडियन मैकरेल (चित्र 2)। इन पाँच मत्स्य मदों ने मिलकर कुल पकड़ का 46 प्रतिशत बनाया। पकड़ के अन्य प्रमुख योगदानकर्ता थे कट्टलफिश, और लिज़ार्ड फिश, प्रत्येक ने 2500 टन से ज़्यादा दर्ज की। महीने के दौरान 0.10 टन की मात्रा के साथ सबसे न्यूनतम लैंडिंग दर्ज करने वाले किस्म थे डबल बार्ड स्पाइन-फुट।

तालिका 2 अप्रैल 2019 के दौरान दर्ज किए गए विभिन्न मत्स्य मदों की मात्रा को दर्शाती है। पेलाजिक फिनफिश संसाधनों में से, रिबन फिश और इंडियन मैकेरल प्रमुख योगदानकर्ता थे और डिमर्सल फिनफिश के मामले में, सबसे अधिक योगदानकर्ता थे जापानी थ्रेडफिन ब्रीम और रेड-टूथेड फाइलफिश। शेलफिश संसाधनों के प्रमुख मद थे, स्क्विड, पीनिड श्रिम्प और कट्टलफिश।

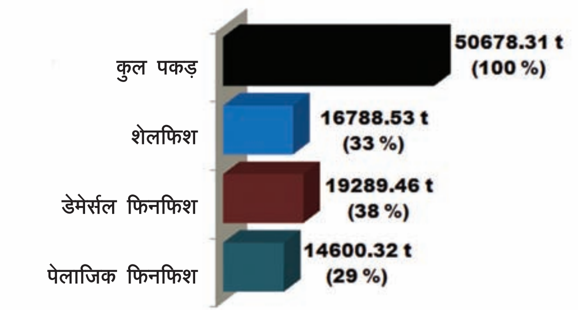

चित्र 1. अप्रैल 2019 के दौरान हुए श्रेणी-वार मत्स्य लैंडिंग

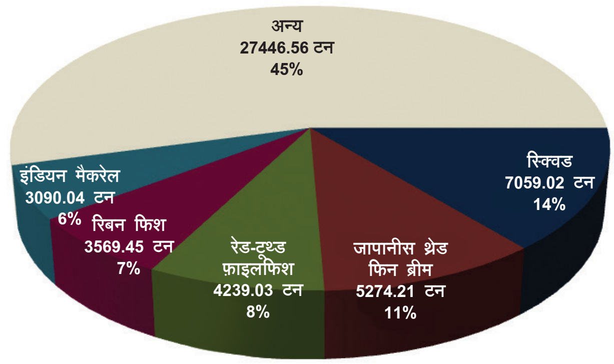

Fig. 2. Major fishery items landed during April 2019

तालिका 2. अप्रैल 2019 के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों की श्रेणी-वार लैंडिंग

मत्स्यन मद	मात्रा टनों में
पेलाजिक फिनफिश	
रिबन फिश	3569.45
इंडियन मैकरेल	3090.04
ट्यूना	1853.69
हॉर्स मैकरेल	1052.44
लेथर जैकेट	775.09
एंचोवी	728.13
ट्रेवालिस	628.08
सीरफिश	506.66
स्काड	467.44
इंडियन ऑइल सारडीन	447.54
बारक्कूडा	362.58
डोलफ़िन फिश	174.03
ओर्यंटल बोनिटो	156.10
बॉम्बे डक	152.66
सेल फिश	149.86
लेस्सर सारडीन	97.55
मारलिन्स	61.67
क्वीन फिश	56.11
नीडिल फिश	43.70
इंडियन इलिषा	39.46
मुल्लेट	37.13

हेरिंग्स	36.85
हिल्सा	32.95
इंडियन साल्मन	27.33
ब्लाक किंग फिश	24.86
सिल्वर सिल्लागो	10.71
सी बास	8.37
फ्लाट नीडिल फिश	4.20
मिल्क फिश	3.10
रेइन्बो रन्नर	2.20
लेडी फिश	0.40
कुल	**14600.32**
डेमेर्सल फिनफिश	
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	5274.21
रेड-टूथ्ड फायल फिश	4239.03
लिज़ार्ड फिश	2816.26
क्रोकर्स	2075.43
कैट फिश	1307.34
सोल फिश	960.43
बुल्स आई	785.95
मून फिश	571.61
रीफ कोड	317.34
स्नैप्पर	197.02
गोट फिश	175.39
पॉम्फ्रेट	160.82
ईल	139.02
पोनी फिश	106.48
रे	90.06
इंडियन हालीबट	13.89
ग्लास्सी पेर्च	11.72
वैप फिन सिल्वर बिड्डी	11.50
घोल	11.40
एम्परर ब्रीम	10.75
टैगर पेर्च	6.13
पैरेट फिश	2.79
लॉन्ग स्पाइन सी ब्रीम	1.50
ओशन ट्रिगर फिश	0.85
येल्लो फिन सी ब्रीम	0.80
ब्लाक टिप शार्क	0.66
स्पाइन फूट	0.60
बैट फिश	0.50
कुल	**19289.46**
शेलफिश	
क्रस्टेशियन्स	
पीनिड श्रिम्प	4675.44
गैर पीनिड श्रिम्प	324.82
समुद्री केकड़ा	391.52
लॉब्स्टर	18.86
कीचड़ केकड़ा	1.10
कुल क्रस्टेशियन्स	5411.74
मोल्लस्क	
स्क्विड	7059.02
कट्टलफिश	2867.05
वेल्क	803.00
ऑक्टोपस	647.73
कुल मोलस्क	11376.80
कुल शेलफिश	**16788.53**
कुल योग	**50678.31**

क्षेत्र-वार लैंडिंग

अप्रैल 2019 में, उत्तर पश्चिम तट से मत्स्य की अधिकतम मात्रा दर्ज की गई, जहाँ महाराष्ट्र और गुजरात के चयनित बंदरगाहों से कुल 24499.74 टन (कुल पकड़ का 49 प्रतिशत) दर्ज की गई। केरल, कर्नाटक और गोवा सहित दक्षिण पश्चिम तट ने कुल पकड़ में 21426.53 टन (42 प्रतिशत) का योगदान दिया। दक्षिण पूर्व तट में, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के चुनिंदा बंदरगाहों से दर्ज की गई कुल पकड़ 3714.77 टन (7 प्रतिशत) थी, जबकि उत्तर पूर्वी तट के पश्चिम बंगाल और ओडिशा के आठ बंदरगाहों से कुल 1037.86 टन (2 प्रतिशत) मत्स्य पकड़ दर्ज किया गया (चित्र 3)।

राज्य-वार लैंडिंग

राज्यवार पकड़ को देखें तो, गुजरात ने 20253.53 टन (कुल पकड़ का 40 प्रतिशत) का अधिकतम लैंडिंग दर्ज की (चित्र 4)। इसके बाद 13998.68 टन (28 प्रतिशत) के साथ कर्नाटक रहा और फिर केरल द्वारा 4980.15 टन (10 प्रतिशत) का योगदान दिया गया। उक्त अवधि के दौरान सबसे कम लैंडिंग ओड़ीशा ने दर्ज, जहाँ से केवल 408.38

टन (1 प्रतिशत) समुद्री मत्स्य पकड़ दर्ज की गई। पश्चिम तट के राज्यों ने कुल मिलाकर 91 प्रतिशत से अधिक का गठन किया।

दिसंबर के दौरान प्रत्येक राज्य में लैंडिंग में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख पांच मत्स्य मदों का विवरण तालिका 3 में दिए गए हैं।

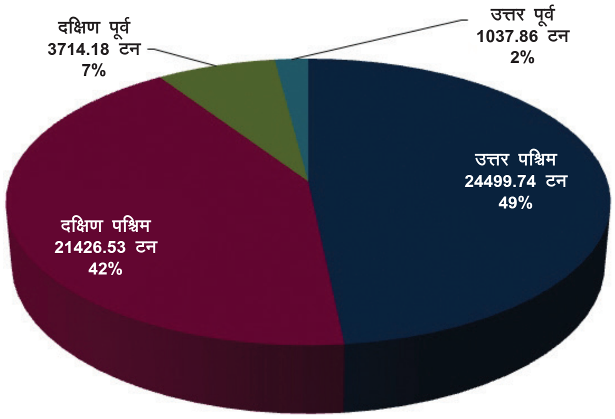

चित्र 3. अप्रैल 2019 के दौरान (टन में) दर्ज की गई क्षेत्र-वार लैंडिंग

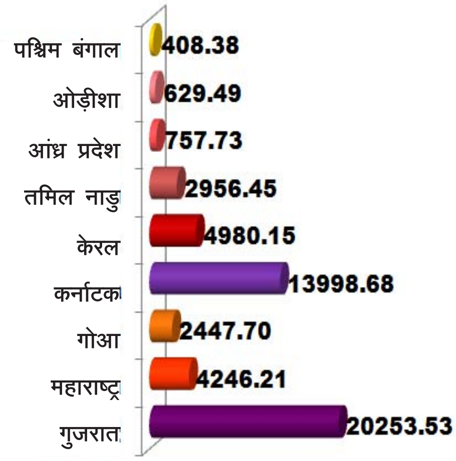

चित्र 4. अप्रैल 2019 के दौरान किए गए राज्य-वार मत्स्य लैंडिंग (टनों में)

तालिका 3. अप्रैल 2019 के दौरान विभिन्न राज्यों में लैंड किए गए प्रमुख मदें

मद	मात्रा टनों में	राज्य के कुल पकड़ प्रतिशत
केरल		
वेल्क	803.00	16.1
गभीर सागर श्रिम्प	450.66	9.0
पूवालन श्रिम्प	438.76	8.8
स्क्विड	316.94	6.4
कट्टलफिश	303.44	6.1
कर्नाटक		
रेड-टूथ्ड फ़ाइल फिश	4235.13	30.3
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	2693.20	19.2
लिज़ार्ड फिश	1337.29	9.6
स्क्विड	1069.60	7.6
इंडियन मैकरेल	993.09	7.1
गोआ		
इंडियन मैकरेल	567.90	23.2
हॉर्स मैकरेल	337.50	13.8
मून फिश	293.80	12.0
स्क्विड	227.92	9.3
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	211.60	8.6
महाराष्ट्र		
स्क्विड	927.35	21.8
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	666.57	15.7
इंडियन मैकरेल	523.09	12.3

हॉर्स मैकरेल	294.89	6.9
लिज़ार्ड फिश	254.71	6.0
गुजरात		
स्क्विड	3975.00	19.6
रिबन फिश	2765.40	13.7
कट्टलफिश	1916.70	9.5
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	1502.00	7.4
क्रोकर	1326.60	6.5
तमिल नाडु		
ट्यूना	624.56	21.1
स्क्विड	423.74	14.3
कट्टलफिश	408.06	13.8
ऑक्टोपस	112.52	3.8
इंडियन ऑइल सारडीन	102.39	3.5
आंध्र प्रदेश		
ट्यूना	137.40	18.1
ब्राउन श्रिम्प	90.77	12.0
जापानीस थ्रेड फिन ब्रीम	68.14	9.0
स्क्विड	61.39	8.1
समुद्री केकड़ा	33.71	4.4
ओड़ीशा		
क्रोकर	218.39	34.7
करिक्काड़ी श्रिम्प	56.79	9.0
रिबन फिश	41.47	6.6
कैट फिश	31.86	5.1
समुद्री केकड़ा	29.85	4.7
पश्चिम बंगाल		
क्रोकर	60.39	14.8
बॉम्बे डक	39.98	9.8
स्क्विड	38.06	9.3
करिक्काड़ी श्रिम्प	33.10	8.1
पूवालन श्रिम्प	25.62	6.3

बन्दरगाह-वार विवरण

चित्र 5 और 6 क्रमशः पश्चिम और पूर्वी तटों के चुनिंदा बंदरगाहों से महीने के दौरान दर्ज किए गए मत्स्य लैंडिंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। 43 बंदरगाहों में से, गुजरात पोरबंदर बंदरगाह ने 8105.83 टन (16%) की सबसे अधिकतम लैंडिंग दर्ज की और इसके बाद मंगरोल बंदरगाह ने 7026.13 टन (14%) का योगदान दर्ज की। पूर्वी तट के साथ, चेन्नई बंदरगाह ने 1434.83 टन की अधिकतम पकड़ दर्ज की। महीने के दौरान, 43 बंदरगाहों में से केवल 11 ने 1000 टन से अधिक मत्स्य पकड़ दर्ज की। मत्स्य पकड़ की सबसे कम मात्रा तमिलनाडु के मंडपम बंदरगाह द्वारा दर्ज किया गया

(15.00 टन)।

नाव आगमन पर अनुमान

अप्रैल 2019 के दौरान कुल 25764 नाव आगमन दर्ज की गई, जिनमें से वेरावल बंदरगाह (4098) ने सर्वोच्छ नाव आगमन रिकार्ड की इसके बाद 3247 नाव आगमनों के साथ वेरावल बन्दरगाह रहे। 76 प्रतिशत से अधिक मत्स्यन यान जिन्होंने अपने पकड़ को बंदरगाहों में लैंड किया गया वह ट्राल्लेर्स श्रेणी का था और शेष लैंडिंग पर्स सीनर्स, गिल नेटर्स, लॉन्ग लाइनर्स और ट्रेडिशनल क्राफ्ट्स के थे।

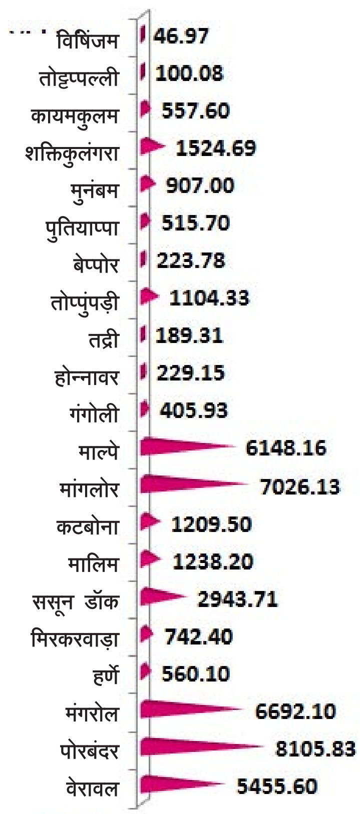

चित्र 5. अप्रैल 2019 के दौरान पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर दर्ज की गई लैंडिंग (टनों में)

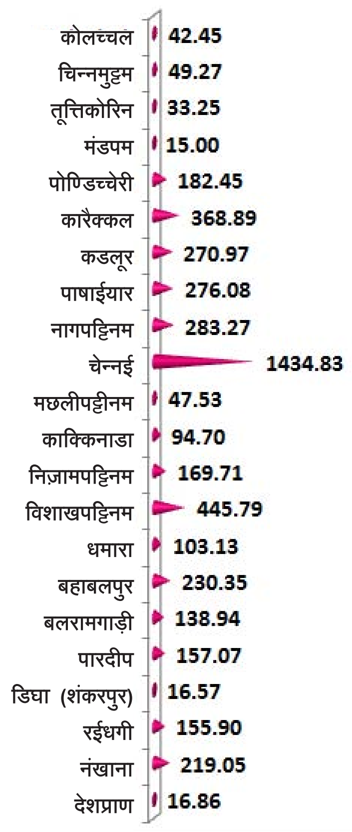

चित्र 6. अप्रैल 2019 के दौरान पूर्वी तट के बंदरगाहों पर दर्ज की गई लैंडिंग (टनों में)

तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 4 में पिछले महीनों के साथ अप्रैल 2019 के आंकड़ों की तुलना प्रस्तुत की है। मार्च की तुलना में अप्रैल में कुल मत्स्य पकड़ में 11500 टन से अधिक की कमी आई थी, और यह पिछले तीन महीनों में सबसे कम था। पकड़ के संदर्भ में डेमेर्सल फिनफिश सर्वोच्छ योगदानकर्ता के रूप में जारी रहा और पेलाजिक फिनफिश तीसरे स्थान पर रही। शेलफिश शेयर में 2 प्रतिशत की कमी और पलाजिक फिनफिश शेयर में 1 प्रतिशत की कमी के साथ डेमेर्सल फिनफिश का प्रतिशत हिस्सा 3 प्रतिशत बढ़ गया। इस अवधि के दौरान विभिन्न मत्स्य मदों के बीच में स्क्विड का सर्वोच्च योगदान रहा। समुद्री तटीय राज्यों में से गुजरात ने भी अपनी प्रमुख स्थिति बरकरार रखी। बन्दरगाहों के संदर्भ में, पोरबंदर बंदरगाह मत्स्य लैंडिंग की मात्रा में वेरावल बंदरगाह से आगे बढ़े। मार्च की तुलना में अप्रैल में कुल नाव आगमन में 1208 से अधिक की कमी दर्ज की गई।

सारांश

अप्रैल 2019 में, भारत के 43 प्रमुख मत्स्यन बंदरगाहों से 50678.31 टन समुद्री मत्स्य संसाधनों की कुल लैंडिंग दर्ज की गई, जहां पेलाजिक फिनफिश और शेलफिश स्टॉक की तुलना में डेमेर्सल फिनफिश ने बड़ी मात्रा में योगदान दिया। मत्स्यन मद-वार लैंडिंग को ध्यान में रखते हुए, महीने के दौरान स्क्विड प्रमुख योगदानकर्ता थे। अप्रैल के दौरान दर्ज किए गए कुल पकड़ का लगभग 91% पश्चिम तट से थे और उत्तर पश्चिम क्षेत्र से सर्वोच्च पकड़ दर्ज की गई। इन समुद्री तटीय राज्यों में से, इस अवधि के दौरान गुजरात ने सर्वोच्च लैंडिंग

दर्ज किया। पूर्वी तट से कम से कम योगदान का कारण दिनांक 15 अप्रैल से शुरू होने वाले मत्स्य पकड़ की प्रतिबंध अवधि हो सकता है। गुजरात ने इस अवधि के दौरान अधिकतम लैंडिंग दर्ज की तथा बंदरगाहों के बीच, पोरबंदर बंदरगाह ने उच्चतम लैंडिंग के साथ-साथ अधिकतम संख्या में नाव आगमन भी दर्ज की।

तालिका 4. डेटा का तुलनात्मक विश्लेषण

पैरामीटर	फरवरी 2019	मार्च 2019	अप्रैल 2019
कुल पकड़	53451.49 टन	62334.97 टन	50678.31 टन
पेलाजिक फ़िनफिश लैंडिंग	17474.47 टन (33%)	18768.66 टन (30%)	14600.32 टन (29%)
डेमेर्सल फ़िनाफिश लैंडिंग	18940.67 टन (35%)	21838.37 टन (35%)	19289.46 टन (38%)
शेलफिश लैंडिंग	17036.35 टन (32%)	21727.94 टन (35%)	16788.53 टन (33%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किए गए प्रजाति	स्क्वीड (12%)	स्क्वीड (15%)	स्क्वीड (14%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया गया राज्य	गुजरात (37%)	गुजरात (44%)	गुजरात (40%)
सर्वोच्च लैंडिंग दर्ज किया गया बंदरगाह	मंगरोल (15%)	वेरावल (16%)	पोरबंदर (16%)
कुल नाव आगमन	**30299**	**26972**	**25764**

**Percentage of total catch*

भीमावरम में पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रतिभागियों का एक दृश्य

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग भीमावरम ने अप्रैल और मई में प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) से संबंधित तीन कार्यक्रम आयोजित किए।

समुद्री खाद्य प्रसंस्करण तकनीशियनों का पहला कार्यक्रम मेसर्स संध्या मराइन लिमिटेड (इकाई-I), पलकोल मंडल, पश्चिम गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश में दिनांक 23-26, 2019 तक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की व्याख्या करते हुए एमपीईडीए के अधिकारी

श्रीमती बिजी, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए नेतृत्व में कंपनी परिसर में प्रतिभागियों की प्री-स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें 33 प्रसंस्करण श्रमिकों ने भाग लिया। यह उम्मीदवारों के कौशल अंतराल का आकलन करने के लिए किया गया था।

प्री-स्क्रीनिंग के बाद, उम्मीदवारों के विवरण जैसेकि आधार संख्या, बैंक खाता संख्या और पता एनएसडीसी साइट में अपलोड किए गए, इसके अनुसरण में एक बैच बनाया गया और 30 उम्मीदवारों को आरपीएल (मान्यता प्राप्त प्राथमिक शिक्षा) प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया गया। प्रसंस्करण श्रमिकों के पहले बैच के लिए प्रशिक्षण की तारीख प्रक्रिया द्वारा आवश्यक रूप में जिलाधीश को सूचित किया गया।

प्रशिक्षुओं को पीएमकेवीवाई किट, जिसमें आवश्यक स्टेशनरी के साथ पीएमकेवीवाई कैप और एप्रन सहित वितरित किए गए। डॉ. पाऊ बाक लून के, सहायक निदेशक और महेता मुकेश जे, तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए, द्वारा सत्र का संचालन राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) और एफ़आईसीएसआई द्वारा जारी राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (एनओएस) के पाठ्यक्रम के आधार पर किया गया।

अंतिम दिन, श्री महाराजन, गुणवत्ता आश्वासन प्रबन्धक बाहरी मूल्यांकनकर्ता द्वारा एक आकलन किया गया। प्रशिक्षकों की उपस्थिति में मूल्यांकनकर्ता द्वारा सैद्धांतिक और व्यावहारिक आकलन किए गए। फोटो, वीडियो औरआवश्यक अन्य दस्तावेज़ सहित आकलन की कार्यवाही को मूल्यांकन के दौरान ही अपलोड किया गया।

दूसरा प्रशिक्षण सत्र दिनांक अप्रैल 30, 2019 से मई 2, 2019 तक मेसर्स संध्या अक्वा एक्स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, कुरुमदाली, पमरू, कृष्णा जिला में आयोजित किया गया।

श्रीमती बिजी, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए नेतृत्व में कंपनी परिसर में प्रतिभागियों की प्री-स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें 36 प्रसंस्करण श्रमिकों ने भाग लिया। यह उम्मीदवारों के कौशल अंतराल का आकलन करने के लिए किया गया था। विवरण एकत्र करने के बाद, 33 उम्मीदवारों को आरपीएल प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया गया। सत्र का संचालन राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) और एफ़आईसीएसआई द्वारा जारी राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (एनओएस) के पाठ्यक्रम के आधार पर श्री महेता मुकेश जे, तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए द्वारा किया गया। अंतिम दिन, श्री साइनाध, बाहरी मूल्यांकनकर्ता द्वारा एक आकलन किया गया।

तीसरा पीएमकेवीवाई प्रशिक्षण सत्र दिनांक मई 14-16, 2019 को मेसर्स सत्या सागर फूड्स प्रा. लिमिटेड, पूर्वी गोदावरी जिला, आंध्र प्रदेश में आयोजित किया गया। श्रीमती बिजी, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए नेतृत्व में कंपनी परिसर में प्रतिभागियों की प्री-स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें 40 प्रसंस्करण श्रमिकों ने भाग लिया। इसके अनुसरण में एक बैच बनाया गया और 38 उम्मीदवारों को आरपीएल प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया गया।

श्री महेता मुकेश जे, तकनीकी अधिकारी द्वारा सत्रों का संचालन किया गया और अंतिम मूल्यांकन श्री साइनाध द्वारा प्रशिक्षुओं के आकलन के लिए एनएसडीसी और एफआईसीएसआई के एनओएस में जारी मूल्यांकन मानदंडों के आधार पर किया गया।

श्रिम्प कृषकों के साथ पणधारियों की परामर्श बैठक

हैचरी से पैदा होने वाले बीजों का वास्तविक बाजार है श्रिम्प कृषक। हैचरी से उत्पाद के उपयोगकर्ताओं के रूप में, हैचरी बीज उत्पादन और प्रमाणीकरण पर कृषकों के विचारों को सुनना बहुत महत्वपूर्ण है। इस सेगमेंट तक पहुँचने के उद्देश्य से, कृषकों के साथ तीन पणधारी परामर्श तमिलनाडु में आयोजित करने की योजना बनाई गई।

इनमें से पहली बैठक दिनांक 7 मई, 2019 को पट्टुकोट्टई, जो तंजावुर और तिरुवारूर जिलों के अधिकांश कृषकों का केंद्र बिंदु और बैठक स्थल है, में आयोजित करने की योजना बनाई। संयोग से, इन जिलों में अधिकतम वैज्ञानिक और संगठित श्रिम्प कृषि किया जाता है।

बैठक में तंजावुर और तिरुवारुर जिलों के विभिन्न हिस्सों से 82 कृषकों ने भाग लिया, जिन्होंने चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लिया। श्री सी. विल्सन, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, नागपट्टिनम द्वारा जलकृषि में प्रतिजैविकी के उपयोग पर होने वाले दुष्प्रभाव तथा प्रमाणीकरण की आवश्यकता और हैचरी की प्रमाणन योजना पर एक प्रस्तुति भी की। योजना पर कृषकों के संदेह को स्पष्ट किया गया। कृषकों ने प्रमाणीकरण योजना पर प्रसन्नता व्यक्त की और योजना पर अपने सुझाव दिए।

समान कार्यक्रम दिनांक 08 मई को वेलांकण्णी में आयोजित किया गया, जिसमें 84 कृषकों ने भाग लिया। वेलांकण्णी को इसीलिए चुना गया कि यह वेदारण्यम, किलवेलूर और नागपट्टिनम और कारैक्कल तालूकों के कृषकों का केंद्र स्थान है, जहाँ श्रिम्प कृषि ज़्यादातर केंद्रित हैं। बैठक में अन्य क्षेत्रों के कुछ कृषक भी शामिल हुए ।इस क्षेत्र में बहुत छोटे से बड़े फार्म हैं, हालांकि इस क्षेत्र में फार्मों का औसत आकार छोटा है। श्री सी विल्सन, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, नागपट्टिनम ने यहाँ भी प्रस्तुतियाँ दीं।

इस श्रेणी की अंतिम बैठक दिनांक 09 मई, 2019 को सिरकाली में आयोजित की गई, जिसमें उत्तरी नागपट्टिनम जिले और कड्डलूर जिले के 75 कृषकों के अलावा अन्य क्षेत्रों के कुछ कृषकों ने भी भाग लिया। श्री सी विल्सन, उप निदेशक, ने बैठक में प्रस्तुतियाँ दीं और और प्रमाणन योजना पर एक और प्रस्तुति श्री जी अलेक्जेंडर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग द्वारा प्रस्तुत की गई।

तीनों बैठकों में कृषक कई मान्य सुझावों के साथ आगे आए। उन्होंने सुझाव दिया कि हैचरी द्वारा बीज की अधिक उत्पादन की जाँच करने के लिए उनकी उत्पादन क्षमता की तुलना में योजना में प्रावधान किया जाना चाहिए, क्योंकि

उत्पादन गुणवत्ता को प्रभावित करता है और उनके उत्पादन के लिए प्रतिजैविकियों के उपयोग की आवश्यकता होती है।

कृषकों को बीज के पीएल आकार की आपूर्ति की जाती है, वह हैचरी द्वारा निर्दिष्ट से अलग हैं, कृषकों ने सुझाव दिया कि यह सुनिश्चित करने का प्रावधान होना चाहिए कि हैचरी से बीज का सही आकार के आपूर्ति की जाएगी।

चूँकि हैचरी या निजी प्रयोगशालाओं के स्वामित्व वाली प्रयोगशाला द्वारा बीजों की गुणवत्ता की जाँच की जाती है, इससे गुणवत्ता का आश्वासन नहीं दिया जा सकता है और अतः बीज की गुणवत्ता और प्रतिजैविकी की जाँच करने के लिए सरकारी प्रयोगशालाएँ स्थापित की जानी चाहिए।

जब प्रमाणित हैचरी से आपूर्ति किए गए बीजों की गुणवत्ता के कारण कृषकों को नुकसान होता है, कृषकों को मुआवजा दिलाने का प्रावधान रखने का सुझाव रखा।

इन बैठक के प्रतिभागियों ने डायरी उद्योग के लिए अमूल द्वारा अपनाए गए सफल के अनुरूप एक मॉडल का सुझाव दिया। कमज़ोर पीएल में प्रतिजैविकियों के उपयोग करने की संभावना अधिक होने के नाते श्रिम्प के स्वास्थ्य के मुद्दों को भी हैचरी के प्रमाणीकरण में शामिल किया जाना है।

कृषकों को जाँच करने के लिए स्वागत कक्ष में एक प्रदर्शनी बोर्ड जिसमें आयात किया गया ब्रूड स्टॉक उत्पादित बीज और तालाबों के स्टॉक का ब्योरा प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

यह सुझाव दिया गया था कि हैचरी में उपयोग किए जाने वाले निवेश को भी प्रमाणित किया जाना चाहिए और यह प्रतिजैविकियों से मुक्त भी होना चाहिए। चूँकि एक हैचरी से दूसरे में स्थानांतरित करते समय नौपल्ली के दुरुपयोग की संभावना है, समान को दोनों हैचारियों में उचित रूप से दर्ज किया जाना चाहिए और लेखापरीक्षा के दौरान सत्यापित किया जाएगा।

कृषकों की राय थी कि हैचरियों की रैंकिंग लेखापरीक्षा के आधार पर ही की जानी चाहिए। कृषकों के लिए गुणवत्ता की जांच करने का प्रावधान होना चाहिए और हैचरी से बीज लेने से पहले बीज प्राप्त होना चाहिए। उपयोग किए गए स्पॉवर्स के चुनाव को दर्ज और लेखा परीक्षकों द्वारा सत्यापन के लिए प्रलेखित किया जाना चाहिए और इस योजना तहत किए गए बीज उत्पादन में खेत पाले हुए ब्रूडर्स के उपयोग की जाँच करने का प्रावधान होना चाहिए।

यह भी सुझाव दिया गया कि हैचरी के प्रमाणीकरण हेतु गठित लेखापरीक्षा समिति में कृषकों का एक प्रतिनिधि भी होना चाहिए।

Subscription Order / Renewal Form

Please enroll me / us as a subscriber / renew my existing subscription of the MPEDA Newsletter. The subscription fee of Rs. 1000/- inclusive of GST for one year is enclosed vide local cheque/DD No...

dt........................ drawn in favour of The Secretary, MPEDA', payable at Kochi.

Please send the journal to the following address:

....

....

Tel No.. Fax : ....

E mail ....

For details, contact:
The Editior, MPEDA Newsletter, MPEDA House, Panampilly Nagar, Kochi - 682 036
Tel: 2311979, 2321722, Fax: 91-484-2312812. Email : newslet@mpeda.gov.in

हैचरी संचालकों की बैठक

एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची ने दिनांक 16 मई, 2019 को श्रिम्प हैचरी संचालकों की एक बैठक आयोजित की जिसमें केरल के प्रमुख श्रिम्प हैचरी संचालकों और मालिकों ने भाग लिया। मत्स्यफेड अड़ाक और आरजीसीए के अधिकारी भी बैठक में भाग लिए, जिसे हैचरी में प्रतिजैविकी मुक्त गुणवत्ता वाले श्रिम्प बीज के उत्पादन के लिए हैचरी प्रमाणन योजना के कार्यान्वयन के तौर-तरीकों के बारे में चर्चा करने के लिए बुलाया गया था।

डॉ. ए एस उपाध्याय, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची के हैचरी प्रमाणन योजना के उद्देश्य और हमारे निर्यात आय को बढ़ावा देने के लिए प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प उत्पादन में इसके महत्व पर एक उपक्षेप के साथ बैठक प्रारंभ हुई। इसके बाद श्रीमती एल्सम्मा इत्ताक, सहायक निदेशक, एमपीईडीए द्वारा "प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बीज उत्पादन के लिए एमपीईडीए प्रमाणन योजना" और श्रिम्प बीज उत्पादन में प्रतिजैविकी से बचने के पीछे की पहल पर एक एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई।

परिचय के बाद प्रतिभागियों के साथ एक बातचीत सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें विषय से संबंधित मान्य बिंदुओं पर चर्चा की गई।

बैठक में यह नोट किया गया कि केरल में स्थित लगभग सभी श्रिम्प हैचरी, मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के अन्य राज्यों से पुनर्निर्मित श्रिम्प नॉप्ली पर बहुत निर्भर हैं।

हैचरी संचालकों ने नॉप्ली की गुणवत्ता और उनकी रोग-मुक्त स्थिति के बारे में गंभीर आशंका प्रकट की। प्रतिभागियों ने सुझाव दिया कि, सभी श्रिम्प नॉप्ली उत्पादन और आपूर्ति इकाइयों को एक अनिवार्य पंजीकरण और निगरानी प्रणाली के तहत लाना महत्वपूर्ण है ताकि गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन के लिए हैचरी संचालकों को रोग और प्रतिजैविकी मुक्त गुणवत्ता वाले नॉप्ली की आपूर्ति का आश्वासन दिया जा सकें।

बैठक में विभिन्न हैचरी निवेश की आपूर्ति और विभिन्न नामों में पूरक, जिसका कोई नियामक तंत्र नहीं है, के बारे में उल्लेख किया गया, इसके परिणामस्वरूप उनमें कुछ प्रतिबंधित प्रतिजैविकी की उपस्थिति भी संभावना है। इसलिए, यह सुझाव दिया गया कि श्रिम्प और प्रोन हैचरी के लिए आपूर्ती की जा रही सभी निवेश का अनिवार्य रूप से पंजीकरण और निगरानी की जानी चाहिए, ताकि ताकि हैचरी उत्पादन प्रणाली के दौरान किसी भी प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के उपयोग से बचें।

श्रिम्प हैचरी संचालकों ने यह भी अनुरोध किया कि उन सभी श्रिम्प हैचरी जिन्हें रोग मुक्त गुणवत्ता नॉप्ली की आपूर्ति करने हेतु एमपीईडीए और आरजीसीए को मुख्य भूमिका निभानी चाहिए ताकि कृषकों को स्वस्थ और प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बीज का उत्पादन किया जा सके। उन्होंने हैचरी प्रमाणन योजना की प्रक्रिया में उसके बुनियादी ढाँचे में सुधार करने के लिए कुछ प्रोत्साहन के लिए भी सुझाव दिया।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि अधिकांश जंगली टाइगर श्रिम्प ब्रूडेर्स डबल्यूएसएसवी वायरस से संक्रमित हैं, प्रतिभागियों ने कहा कि एसपीएफ ब्रूडर्स की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए टाइगर श्रिम्प बहुलीकरण केंद्रों और श्रिम्प बीज का हैचरी उत्पादन की आवश्यकता है।

श्री वी. विनोद, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची; डॉ. मनोज, परियोजना प्रबंधक, राजीव गांधी जलकृषि केंद्र, श्री बिजिमन पी., फील्ड पर्यवेक्षक और श्रीमती मंजूषा के।, फील्ड पर्यवेक्षक ने भी हैचरी संचालकों के साथ विचार-विमर्श और सहभागिता में भाग लिया। श्री बीजिमोन पी. के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम संपन्न हुई।

LARGEST AQUACULTURE EXHIBITION IN ASIA

अक्वा अक्वारिया इंडिया 2019

Aqua Aquaria India

एक्वा एक्वेरिया इंडिया-2019

TAKING **BLUE REVOLUTION**
TO INDIA'S HINTERLAND

30th August - 1st September 2019
HITEX EXHIBITION CENTER , Hyderabad, India
www.aquaaquaria.com

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
THE MARINE PRODUCTS EXPORT DEVELOPMENT AUTHORITY
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)

www.mpeda.gov.in

सत्यमेव जयते

हैचरी के प्रतिजैविकी मुक्त प्रमाणन पर पणधारी परामर्श

श्री पी. अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए भीमावरम में कृषकों को संबोधित करते हुए।

आंध्र प्रदेश के तटीय जिले, ख़ासकर पश्चिम गोदावरी, पूर्वी गोदावरी और कृष्णा, अपने जलकृषि उत्पादों और इसके निर्यात के माध्यम से देश की जीडीपी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। राज्य, उन्नत वैज्ञानिक जलकृषि पद्धतियों के माध्यम से श्रिम्प उत्पादन की भारी मात्रा को प्राप्त करने में सर्वोच्च रहा है।

"भीमावरम श्रिम्प" नाम की प्रमुखता और बहुविज्ञता से ही पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों में इस क्षेत्र ने श्रिम्प के वैश्विक बाजार में जिस तरह की लोकप्रियता हासिल की है। यह सामान्य ज्ञान है कि चिरस्थाईता उद्योग में बनाए गए मानकों के स्तर के सीधे आनुपातिक है, न केवल जीवित रहने के लिए, बल्कि पनपने के लिए भी। किसी भी तरह की कमी एक अतुलनीय गतिशील हानि पहुंचा सकती है।

यह वह जगह है जहाँ जलकृषि को आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है, क्योंकि हाल के दिनों में उद्योग के साथ चीजें ठीक नहीं चल रही है। रोग प्रकोप, प्रतिजैविकियों का दुरुपयोग, अनुचित कल्चर तरीके और तकनीकी प्रशिक्षुओं की कमी जैसे मुद्दों ने इस क्षेत्र में उत्पादन की प्रवृत्ति को नीचे ला दिया है। रोग प्रकोप के प्रसार के साथ, कृषकों ने प्रतिजैविकी जैसे निवेश लागू करके उत्तरजीविता को बढ़ाना शुरू कर दिया। इससे कुछ समय तक मदद मिल सकती है, लेकिन इस अभ्यास के नतीजे का उद्योग पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ेगा। इसलिए यह एमपीईडीए के लिए रचनात्मक हस्तक्षेप करने और अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ उद्योग के मानकों को ऊंचा करने के लिए छोड़ दिया गया था। इसलिए रचनात्मक हस्तक्षेप करने के लिए और अंतरराष्ट्रीय मानकों के आनुरूप उद्योग के मानकों को बढ़ाने हेतु एमपीईडीए के लिए छोड़ दिया है।

आंध्र प्रदेश में जलकृषि उद्योग की स्थिति ने कोई गंभीर क्षति हो जाने से पहले प्रतिजैविकी के दुरुपयोग के मुद्दों को गंभीरता से लेने के लिए एमपीईडीए को प्रेरित किया। वर्तमान स्थिति 1990 के दशक में पीनस मोनोडोन के साथ सामना करना पड़ा। भारतीय जलकृषि उद्योग की पूर्ण अनुमार्गनीयता का सृजन और अनुपालन करने हेतु एमपीईडीए ने कृषकों और हैचरी संचालकों दोनों के लिए एक प्रमाणन योजना लेकर आई है। इससे न केवल मानकों में सुधार की उम्मीद है बल्कि कृषकों को अच्छा बाज़ार पहुँच भी प्राप्त हो सकता है।

प्रतिजैविकी मुक्त जागरूकता अभियान और प्रमाणन योजनाओं पर कार्यक्रम सभी हितधारकों द्वारा अच्छी तरह से प्राप्त किए जा रहे हैं। उद्योग अनुमार्गाणीयता और प्रमाणन के महत्व को स्पष्ट और महसूस करने लगा है। उद्योग के पणधारियों के बीच धीरे-धीरे फ़ैल रही है कि एमपीईडीए की प्रमाणन योजना समय की ज़रूरत है, अगर कोई कृषक और हैचरी संचालक की प्रतिक्रियाओं से जाता है, जिन्होंने विभिन्न परामर्श कार्यशालाओं में भाग लिया। वर्ष 2020 तक आंध्र प्रदेश में कृषकों को शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान की एक श्रृंखला के माध्यम से एमपीईडीए पूरी तरह से प्रतिजैविकी मुक्त (एबीएफ़) श्रिम्प उत्पादन प्राप्त करने के लक्ष्य की दिशा में लगातार काम कर रहा है।

भीमावरम के एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय केंद्र द्वारा भीमावरम अमलापुरम, काकीनाडा और विशाखपट्टनम में, 'हैचरियों के प्रतिजैविकी मुक्त प्रमाणन' पर सात पणधारी परामर्श बैठकों का आयोजन सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, जिसका संचालन श्री पी. अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक ने किया। इनके अलावा, एमपीईडीए लगातार रोग व्यापक क्षेत्रों की निगरानी कर रहा है और प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के उपयोग के खिलाफ जागरूकता अभियान चला रहा है। हाल ही में, पश्चिम गोदावरी जिले के पिप्पारा और केशवराम में दो और अभियान चलाए गए।

'प्रतिजैविकी-मुक्त श्रिम्प हैचरी प्रमाणन' पर कृषक बैठक

देश के जलकृषि क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के प्रयास में, एमपीईडीए ने हैचरियों को स्वस्थ और रोग-मुक्त और प्रतिजैविकी-मुक्त साथ ही स्वस्थ बीजों के उत्पादन और आपूर्ति के लिए एक नई प्रमाणन योजना तैयार की है। मानकों और प्रक्रियाओं के साथ एक मसौदा योजना एमपीईडीए, आरजीसीए, नाक्सा और नेटफिश के वेबसाइटों पर प्रकाशित की गई है। पणधारियों और जनता को इस पर सुझाव और टिप्पणी देने के लिए यह 60 दिनों के लिए उपलब्ध होगा।

इस सिलसिले में, कृषकों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने हेतु एमपीईडीए के रत्नागिरी उप क्षेत्रीय प्रभाग ने पणधारियों के दो बैठकें आयोजित कीं।

बैठक, योजना संरचना और कार्यान्वयन प्रक्रिया में सुधार हेतु सुझाव एकत्र करने के लिए आयोजित की गईं। प्रथम बैठक दिनांक 25 अप्रैल, 2019 को एमपीईडीए, उप क्षेत्रीय प्रभाग रत्नागिरी के कार्यालय में और दूसरी बैठक दिनांक 1 मई, 2019 को सिंधुदुर्ग जिले के शिरोडा में आयोजित की गई।

प्रमाणीकरण योजना पर सहायक निदेशक श्री साजी जोर्ज द्वारा परिचयात्मक भाषण

रत्नागिरी

बैठक में श्रिम्प, केकड़ा और मत्स्य कृषक, नए उद्यमकर्ताओं, चारा विक्रेता, मात्स्यिकी कॉलेज, रत्नागिरी के संकाय आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी 21 प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की।

श्री साजी जोर्ज, सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरि द्वारा समग्र रूप से जलकृषि क्षेत्र के लाभ के लिए एमपीईडीए द्वारा शुरू की जाने वाली प्रमाणन योजना पर एक परिचयात्मक भाषण के साथ शुरू की गई।

डॉ. विष्णुदास आर. गुणगा, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने प्रमाणन योजना के उद्देश्यों के बारे में समझाया और जलकृषि में प्रतिजैविकी के दुरुपयोग पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने मसौदे में उल्लिखित प्रमाणीकरण के लिए मानकों के मार्गदर्शक सिद्धांतों, हैचरी के संचालन के दिशा-निर्देशों और प्रमाणीकरण की प्रक्रिया के बारे में बताया।

संवादात्मक सत्र के दौरान, कृषकों ने एमपीईडीए अधिकारियों के साथ प्रमाणन प्रक्रिया पर अपने विभिन्न संदेहों को स्पष्ट किया, और कृषक इस बात से खुश थे कि एमपीईडीए उत्पादन और आपूर्ति के बीज की गुणवत्ता में सुधार के लिए हैचरी की प्रमाणन योजना लेकर आ रहा है।

श्रिम्प कृषक श्री प्रदीप पवार ने कहा, "हैचरी से कम गुणवत्ता वाले बीज की आपूर्ति, श्रिम्प कृषि के पूरे समस्याओं का मूल कारण है और इसलिए, बीज की गुणवत्ता में सुधार के लिए एमपीईडीए द्वारा की गई यह पहल सराहनीय है।"

श्री मंगेश चव्हाण, एक केकड़ा कृषक ने कृषकों को रोग और प्रतिजैविकी मुक्त बीजों की आपूर्ति न करने वाले हैचरी संचालकों पर कठोर कार्रवाई करने के लिए कहा।

एक अन्य केकड़ा कृषक श्री राजनिष महागांवकर ने इस क्षेत्र के लिए इस प्रकार के प्रमाणन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और कहा कि लंबे समय में हर लोग इससे लाभान्वित होंगे।

डॉ. पगारकर, प्रोफेसर, मात्स्यिकी कॉलेज, रत्नागिरी, ने कहा कि हालांकि बीज में पाए जाने वाले अवशिष्ट प्रतिजैविकी कल्चर अवधि के दौरान गायब हो जाता है, प्रतिजैविकी का उपयोग करके पालने वाले बीज, प्रतिजैविकी का उपयोग न करके पालने वाले बीजों की तुलना में घटिया होंगे।

कार्यक्रम के अंत में प्रमाणन योजना पर प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया ली गई।

जलकृषि परिदृश्य

शिरोडा, सिंधुदुर्ग

डॉ. विष्णुदास आर. गुनागा ने शिरोडा में कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए हैचरी प्रमाणन योजना पर प्रस्तुति के साथ-साथ परिचयात्मक भाषण भी दिया। बातचीत के दौरान, श्री संजय पाटिल, एक प्रमुख श्रिम्प कृषक, रेडी, ने एमपीईडीए से हैचरी प्रमाणन योजना को अनिवार्य बनाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि एमपीईडीए एनआरसीपी नमूने केवल नामांकित कृषकों से एकत्र कर रहा है, और वे केवल किसी भी सकारात्मक परिणाम के लिए खींच लिया जाएगा।

डॉ. विष्णुदास गुणगा, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एमपीईडीए द्वारा पावर प्वाइंट प्रस्तुति देते हुए।

"महाराष्ट्र में कोई हैचरी न होने के कारण महाराष्ट्र क्षेत्र के कृषकों को अन्य राज्यों से ही बीज मिल रहा है। इस कारण से, महाराष्ट्र के छोटे कृषक बीज खरीद के लिए बिचौलियों पर निर्भर हैं और इसके कारण कृषकों को गुणवत्तापूर्ण बीज नहीं मिल रहा है।" डॉ. डी.पी. गोसावी, एक अन्य प्रमुख श्रिम्प कृषक ने कहा।

एक विस्तृत चर्चा और बातचीत के बाद, बैठक में भाग लिए गए 34 कृषकों से प्रमाणीकरण योजना पर प्रतिक्रिया एकत्र की।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग ने हैचरी प्रमाणन के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए तीन सत्र आयोजित किए। सत्र का आयोजन पूर्ब मेदिनीपुर में दिनांक 16 मई 2019 को, दिनांक 28 मई 2019 को ओल्ड कोर्ट कॉम्प्लेक्स, काकद्वीप, दक्षिण 24 परगना में और 30 मई, 2019 को टी बोर्ड बिल्डिंग, कोलकाता में किया गया। सीएम हीरो शो रूम, पुरबा मेदिनीपुर में कोंटाई, पश्चिम बंगाल में प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बीज उत्पादन के लिए हैचरी के प्रमाणन पर कार्यशाला आयोजित की गई इसमें हैचरी संचालक, निर्यातक, कृषक, मछुआरे और चारा विक्रेतावों का प्रतिनिधित्व करने वाले 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सत्र की शुरुआत श्री देबाशीष रॉय, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, उप क्षेत्रीय प्रभाग, कोंटाई के स्वागत भाषण से हुई। कार्यशाला में अन्य लोगों के साथ श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता; श्री चिंतामोनी मोंडल, एक श्रिम्प कृषक और चारा विक्रेता एवं निर्यातक; श्री कामदेब जाना, श्रिम्प कृषक, चारा विक्रेता, मत्स्यन यान मालिक और निर्यातक; श्री श्याम सुंदर दास, सचिव, दिघा मछुआरे और मछली व्यापार संघ आदि उपस्थित थे।

श्री अर्चिमाँन लाहिड़ी ने "हम हैचरी में प्रतिजैविकी प्रतिबंध क्यों करते हैं" और "श्रिम्प हैचरी के लिए प्रमाणन प्रक्रिया" जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं। उन्होंने जलकृषि में प्रतिजैविकियों के उपयोग के दुष्प्रभावों के बारे में भी विस्तार से बात की।

श्री जॉनसन डी 'क्रूज़, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने "हैचरी के प्रमाणन पर सामान्य प्रस्तुति' और 'एमपीईडीए की प्रमाणन योजनाएँ' पर प्रस्तुतियाँ दीं और एमपीईडीए की नामांकन प्रक्रिया और इसके महत्व के बारे में समझाया।

हैचरी की ग्रेडिंग प्रणाली और एमपीईडीए वेबसाइट में उनके प्रकाशन को सामान्य रूप से प्रतिभागियों द्वारा स्वागत किया गया। वे सभी इस राय भी व्यक्त की कि निकट भविष्य में

ऐसी प्रमाणीकरण प्रक्रिया फ़ार्मों में भी जारी की जानी चाहिए। श्री धिरित एक्का, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ बैठक संपन्न हुई।

काकद्वीप

दक्षिण 24 परगना जिले के काकद्वीप, ओल्ड कोर्ट कॉम्प्लेक्स में प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बीज उत्पादन हेतु हैचरी प्रमाणन पर आयोजित कार्यशाला में 110 से अधिक कृषकों, मछुआरों और चारा विक्रेताओं ने भाग लिया।

श्री धीरित एक्का, सहयाक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने दर्शकों का स्वागत किया और श्री जॉनसन डी 'क्रूज़, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता; श्री विवेकानंद पांडा, श्रिम्प कृषक और चारा विक्रेता; और श्री प्रदीप मैती, फील्ड प्रबंधक, नाक्सा, ने भाषण दिया।

जॉनसन डी 'क्रूज़ ने "हम हैचरी में प्रतिजविकी क्यों रोकते हैं" और "श्रिम्प हैचरियों के लिए प्रमाणन प्रक्रिया" पर प्रस्तुतियाँ दीं और निर्यात के लिए रखे जलकृषि उत्पाद से प्रतिजैविकियों का पता लगाने पर होने वाले नकारात्मक बाजार प्रभाव के बारे में चेतावनी दी।

श्री धिरित एक्का, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने "हैचरी के प्रमाणन पर सामान्य प्रस्तुति" और "एमपीईडीए के प्रमाणन योजना" पर प्रस्तुतियाँ दीं और एमपीईडीए की नामांकन प्रक्रिया और इसके महत्व के बारे में समझाया। श्री प्रदीप मैती, फील्ड प्रबंधक, नाक्सा ने काकद्वीप में 'अक्वा वन लैब' की स्थापना पर प्रस्तुति दी।

काकद्वीप में कार्यक्रम का एक दृश्य

चर्चा के दौरान, अधिकांश किसानों ने इस बात पर मुद्दा उठाया कि किसी विशेष उत्पाद में किसी प्रतिजैविकी की उपस्थिति को कैसे पहचानें। उन्हें सीएए- अनुमोदित उत्पाद का उपयोग करने की सलाह दी गई। यह सूचित किया गया कि हालाँकि सलाहकार और तकनीशियन अपने फार्मों में गैर-कानूनी उत्पादों के अवैध आवेदन के लिए ज़ोर देंगे, लेकिन यह भविष्य में उनके लिए अनावश्यक परेशानियों को आमंत्रित कर सकता है। जॉनसन डी 'क्रूज़ ने धन्यवाद ज्ञापित की।

कोलकाता

टी बोर्ड के सम्मेलन कक्ष, बिल्डिंग, कोलकाता में आयोजित कार्यशाला में 40 से अधिक कृषकों, चारा विक्रेताओं, निर्यातकों, श्रिम्प बीज नर्सरी पालन इकाई मालिकों और कमीशन एजेंटों ने भाग लिया।

श्री धिरित एक्का, सहायक निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने पावर पॉइंट पर प्रस्तुति देते हुए।

श्री धिरित एक्का, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता ने अपने स्वागत भाषण के साथ बैठक प्रारंभ की। इस अवसर पर श्री अर्चिमान लाहिड़ी, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोलकाता; श्री राजशेखर बनर्जी, अध्यक्ष और श्री परवेज अहमद खान, सचिव, समुद्री खाद्य निर्यातक संघ, पश्चिम बंगाल शाखा ने भाषण दी।

श्री अर्चिमान लाहिड़ी ने एमपीईडीए की नामांकन योजना और भारत में जलकृषि में प्रतिजैविकियों की खोज आदि विषय पर एक विस्तृत विवरण देने से पहले एमपीईडीए की प्रमाणन योजनाओं पर एक संक्षिप्त परिचय दिया। श्री राजशेखर बनर्जी ने श्रिम्प निर्यात परेषण में प्रतिजैविकी का पता लगाने के कारण निर्यातकों को होने वाली कठिनाइयों के बारे में बात की। उन्होंने हैचरी से प्रसंस्करण संयंत्र तक के जलकृषि के सारे चरणों में प्रतिजैविकी के उपयोग से बचने की सलाह दिया।

श्री परवेज अहमद खान, जो एक कृषक और निर्यातक भी हैं, पश्चिम बंगाल के विशेष संदर्भ के साथ भारत से समुद्री खाद्य निर्यात के इतिहास का एक त्वरित पुनर्कथन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जब तक प्रतिजैविकी की उपस्थिति को नियंत्रित नहीं किया जाता, भारत से निर्यातित समुद्री खाद्य को एक गंभीर प्रहार पहुंचेगा और इससे हैचरी संचालकों से लेकर निर्यातकों तक के क्षेत्र के सभी खिलाड़ियों का नुकसान होगा।

श्रिम्प नर्सरी संचालक एमपीईडीए के साथ अपनी इकाइयों के नामांकन की मांग कर रहे थे और वे सभी भारत में जलकृषि इकाइयों को प्रमाणित करने के लिए एमपीईडीए द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना कर रहे थे। जॉनसन डी 'क्रूज़ ने बैठक को समाप्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रतिबंधित प्रतिजैविकी पर जागरूकता अभियान

प्रतिभागियों का एक दृश्य

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, कन्नूर ने दिनांक मई 30, 2019 को जलकृषि में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के उपयोग के खिलाफ, एमपीईडीए के कृषि नामांकन और प्रमाणन योजना का महत्व पर एक दिवसीय जागरूकता अभियान का आयोजन किया।

बैठक कन्नूर के सार्वजनिक पुस्तकालय, पारप्रम रोड, कोलाड, तलश्शेरी में आयोजित की गई, जिसमें कोलाड, धर्मदम, एरनहोली, पारप्रम और मेलूर क्षेत्रों के 19 जलकृषि कृषकों ने भाग लिया।

श्री एस. अतुल राज, फील्ड पर्यवेक्षक द्वारा तकनीकी सत्र का संचालन किया गया और फार्म नामांकन, एमपीईडीए की प्रमाणन योजना, जलकृषि में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों के दुरुपयोग और यह हमारे देश के निर्यात को कैसे प्रभावित करता है, के बारे में विस्तार से बताया गया।

कृषकों ने एमपीईडीए अधिकारी के साथ इन विषयों पर बातचीत और विचार विमर्श किया और वन्नामी कल्चर में चारा देने तथा जल गुणवत्ता मुद्दों पर अपने शंकाओं को स्पष्ट किया गया। उन्हें विपणन युक्तियाँ भी दी गई।

इस क्षेत्र के प्रमुख कृषक, श्री राउफ ने कृषकों से एमपीईडीए के साथ नामांकन करने और प्रमाणन योजना का लाभ उठाने का अनुरोध किया। अभियान के दौरान, कृषकों को वल्लारपाडम के आरजीसीए हैचरी से अच्छी गुणवत्ता वाले टाइगर श्रिम्प के बीज की उपलब्धता के बारे में बताया गया।

प्रतिभागियों के बीच फार्म नामांकन आवेदन, प्रमाणन योजना के लिए अग्रिम अनुमोदन आवेदन पत्र और जलकृषि में प्रतिजैविकियों के दुरुपयोग के बारे में पत्रक आदि वितरित किए कार्यक्रम का समापन श्री रमेश के.वी., धर्मडोम के एक श्रिम्प कृषक, के धन्यवाद प्रस्ताव साथ हुआ।।

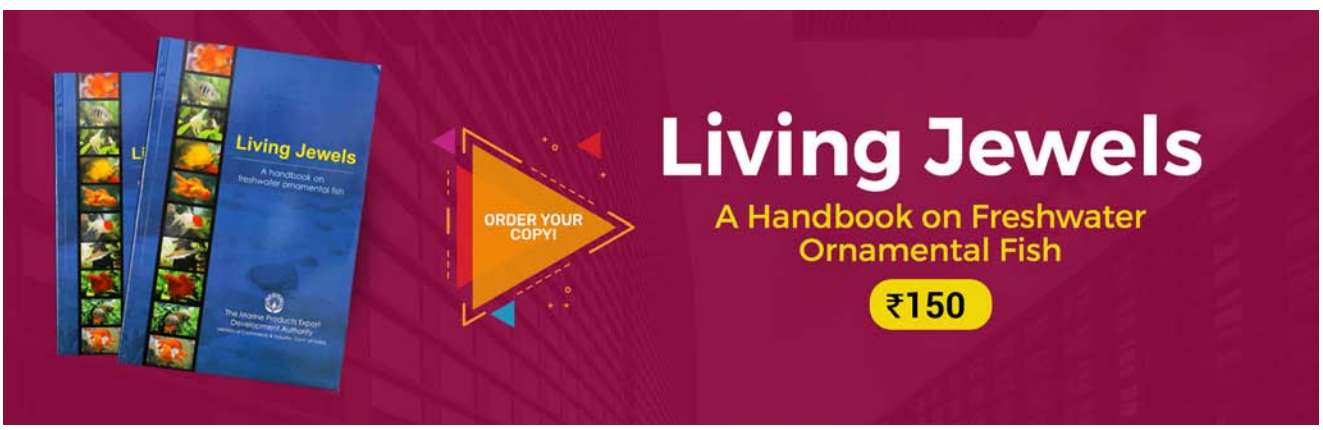

'चिरस्थाई श्रिम्प कृषि और विविधीकृत प्रजाति जलकृषि' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

श्री लक्ष्मण तारि, फील्ड दौरे के दौरान सीप कृषि के बारे में समझाते हुए

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने दिनांक 10-12 मई, 2019 से महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के मोंड गांव में "चिरस्थाई श्रिम्प कृषि और विविधीकृत प्रजाति जलकृषि" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देशय प्रशिक्षुओं को पारिस्थितिक रूप से और चिरस्थाई कृषि, बीएमपी और जलकृषि पद्धतियों में विविधीकरण पर विशेष जोर देने के साथ जलकृषि में और विकास की गुंजाइश आदि पर प्रशिक्षित करना प्रशिक्षण कार्यक्रम में 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

श्री काशीनाथ तुकाराम तारि, सचिव, महाराष्ट्र जलकृषि कृषक संघ, महाराष्ट्र ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सत्र के दौरान एमपीईडीए के अधिकारियों द्वारा स्थल चयन, प्रजाति चयन, फार्म निर्माण और फार्म प्रबंधन से संबंधित जैसे विभिन्न विषयों पर गहराई से चर्चा की गई।

श्री काशीनाथ तारी एक संसाधन व्यक्ति थे और उन्होंने 'श्रिम्प कृषि में निहित तकनीकों' पर बात की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोलने वाले अन्य संसाधन व्यक्ति श्री जाफर वाडकर, एक प्रगतिशील केकड़ा कृषक जिन्होंने 'वर्टिकल क्रैब फार्मिंग' पर व्याख्यान दी; एक उद्यमी श्री मिलिंद सारंग ने 'आलंकारिक मत्स्य और इसके प्रजनन' के बारे में बात की और एक प्रगतिशील मीठा पानी कृषक श्री अरुण अलसे ने कोल्हापुर की कम नमकीन भूमि में वन्नामि कल्चर के अपने अनुभव का साझा किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण स्थल के पास के श्री काशीनाथ तारी, एमएएफ़ए के स्वामित्व वाले श्रिम्प फार्म में एक फील्ड दौरे पर ले जाया गया। फार्म से जुड़े व्यावहारिक पहलू जैसे जैव-सुरक्षा उपाय, बेहतर प्रबंधन प्रथा (जीएमपी) और विभिन्न जल गुणवत्ता मानकों के परीक्षण क्षेत्र उपकरण के उपयोग के बारे में प्रशिक्षुओं को समझाया गया। उसके बाद, प्रशिक्षुओं को तारामुबरी में स्थित केकड़ा और सीप कल्चर इकाइयों में ले जाया गया। श्री लक्ष्मण तारी, फार्म के कार्यवाहक ने पेन में केकड़े कल्चर ओर सीप के राफ्ट कल्चर के तकनीकों के बारे में समझाया।

समापन समारोह के साथ तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें श्री षाजी जोर्ज, एमपीईडीए के सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने भाग लिए गए सभी 24 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किए।

महाराष्ट्र के गताडवाड़ी गाँव में आयोजित जागरूकता अभियान

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने दिनांक 21 मई, 2019 को महाराष्ट्र के सांगली जिले के गटाडवाड़ी गाँव में दो जागरूकता अभियान कार्यक्रम आयोजित किए। सांगली, महाराष्ट्र के कोल्हापुर और सतारा जिले, कृषि क्षेत्रों के रूप में प्रसिद्ध है।

ये जिले ऊपरी कृष्णा बेसिन के अंतर्गत आते हैं, और ये जिले बेहद उत्पादक थे और यहाँ के अधिकांश कृषक मोनो फसल के रूप में गन्ने का अविरल कृषि करता है। हालांकि, उर्वरकों और रसायनों के अत्यधिक उपयोग ने भूजल को खारा बना दिया है और यह सिंचाई के लिए उपयुक्त नहीं है। क्षेत्र के अधिकांश चीनी उद्योग भी अपने अपशिष्टों को नदी के पानी में छोड़ते हैं और यह जल प्रदूषण का कारण बन जाते हैं।

इस पृष्ठभूमि में जलकृषि पर जागरूकता कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, पहला कार्यक्रम 'जलकृषि में प्रतिजैविकियों के दुरुपयोग 'और दूसरा कार्यक्रम जलकृषि के विविधीकरण' पर था।

एमपीईडीए ने अप्रैल 2017 में कोल्हापुर के अकीवत गाँव में एक प्रदर्शन फार्म शुरू की, जहाँ 0.05 हे. डब्ल्यूएसए

की नर्सरी में 1.70 लाख वन्नामी के बीज को 2 महीने के लिए रखा गया। नर्सरी चरण में 72.5 प्रतिशत जीवित पाया गया और फिर उन्हें 0.20 हे. डब्लूएसए के ग्रो-आउट तालाब में स्थानांतरित कर दिया गया। ग्रो-आउट तालाब में 129 दिनों तक पालने के बाद फसल काटा गया। बीज औसतन 29.2 ग्राम तक बढ़ गए। मेसर्स वेस्ट कोस्ट फ्रोजन फूड्स प्रा. लिमिटेड, सूरत, गुजरात द्वारा कुल 1,796 किलोग्राम श्रिम्प हार्वेस्ट और प्राप्त किया गया। कुल मिलाकर उत्तरजीविका दर केवल 36.5 प्रतिशत थी, लेकिन उत्पादकता बहुत ऊँचा था।

एमपीईडीए के प्रदर्शन के बाद, अंतर्देशीय क्षेत्रों के कई उद्यमकर्ताओं ने अपने क्षेत्रों को वन्नामी कल्चर के लिए लेने में रुचि दिखाई। इसके बाद, एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने इस क्षेत्र में जागरूकता अभियान और प्रस्तावित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला शुरू की। गटाडवाड़ी में आयोजित कार्यक्रम इस पहल का हिस्सा था।

डॉ. टी. आर. जिबिन कुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और क्षेत्र के फायदे के लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने कृषकों के लाभ के लिए उपलब्ध एमपीईडीए की विभिन्न योजनाओं और जलकृषि के विकास में एमपीईडीए की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. विष्णुदास आर. गुणगा, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने जलीकृषि में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों और रसायनों की सूची प्रस्तुत की और उनका उपयोग करने से होने वाले परिणामों के बारे में बताया। उन्होंने किसानों को आगाह किया कि यदि कल्चर प्रथाओं के दौरान प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों का इस्तेमाल किया गया, यह श्रिम्प के ऊतकों में जमा हो जाएगा और विभिन्न विदेशी गंतव्यों के लिए भेजे गए खेपों में पता लगाया जाएगा। और ऐसी खेपों को अस्वीकार या नष्ट कर दिया जाएगा इससे आर्थिक नुकसान के अलावा देश की प्रतिष्ठा का नुकसान भी हो जाएगा। उन्होंने सीबास, केकड़े, तिलापिया, मसल्स, सीप आदि में शामिल जलकृषि और कृषि तकनीकों के विविधीकरण पर जागरूकता अभियान कार्यक्रम संचालित करने के उद्देश्य के बारे में भी बताया।

श्री अरुण अलसे, एक प्रगतिशील मीठापानी कृषक और खेत के मालिक, जहाँ वन्नामी प्रदर्शन किया गया था, श्रिम्प कृषि के फायदे के बारे में बात की और कल्चर प्रथाओं के दौरान सामना करने वाले जोखिमों की विविधता के बारे में बताया।

संभावित कृषि क्षेत्र के लिए फील्ड दौरा

उन्होंने कृषकों को बिना किसी प्रतिबंधित प्रतिजैविकी का उपयोग किए पर्यावरणानुकूल और चिरस्थाई जलकृषि अभ्यास करने की सलाह दी।

प्रतिभागियों को एमपीईडीए अधिकारियों के साथ बातचीत करने और प्रतिजैविकी मुद्दे, जलकृषि विविधीकरण, केकड़े और तिलापिया में शामिल कृषि तकनीक आदि के बारे में अपने संदेह को स्पष्ट करने का मौका दिया गया। सभी 17 संभावित जलकृषि कृषकों एक क्षेत्र निरीक्षण के रूप में पास के खारे प्रभावित कृषि फार्म पर ले जाया गया। एमपीईडीए खाराअंतर्देशीय क्षेत्रों में श्रिम्प जलकृषि और आसपास के वातावरण को प्रभावित किए बिना और, सबसे महत्वपूर्ण रूप में, स्थानीय पणधारियों के हित में चिरस्थाई दृष्टिकोण में महाराष्ट्र के अंतर्देशीय मीठे पानी के क्षेत्रों में तिलापिया कल्चर को लोकप्रिय बनाने में सकारात्मक और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

इस पहलू में, एमपीईडीए द्वारा कार्यान्वयन पर एक स्पष्ट रोड मैप के साथ क्लस्टर फ़ार्मिंग को बढ़ावा देने का प्रस्ताव है। पहले कदम के रूप में, संभावित क्षेत्र, जिसे मिट्टी की लवणता के कारण कृषि के लिए अनुपयुक्त बना दिया गया है, इनका पहचान कोल्हापुर, सांगली और सतारा जिलों में की जाने की और संबंधित विभागों के पास उपलब्ध तारीख लेने की आवशकता है।

इच्छुक उद्यमियों और बैंकों, राजस्व, कृषि और मात्स्यिकी जैसे विभिन्न विभाग के अधिकारियों से मिलने से पहले वन्नामी और तिलापिया कल्चर के लिए भूमि की उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न मापदंडों के लिए पानी और मिट्टी के नमूनों को एकत्र किया जाना चाहिए। क्लस्टर कृषि के लिए लाभार्थियों का चयन उन्हें आगे वन्नामी कृषि पर प्रशिक्षण दिए जाएंगे।

एमपीईडीए द्वारा पर्यावरणीय मुद्दों से निपटने के लिए पुनरावर्तन प्रणाली को अपनाने हेतु आम नमक का उपयोग किए बिना कल्चर प्रथा, प्रति वर्ग मीटर 25 संख्या से कम स्टॉकिंग घनत्व, निकासी नाले तक कटे हुए पानी की शून्य प्रतिशत जैसे कदमों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

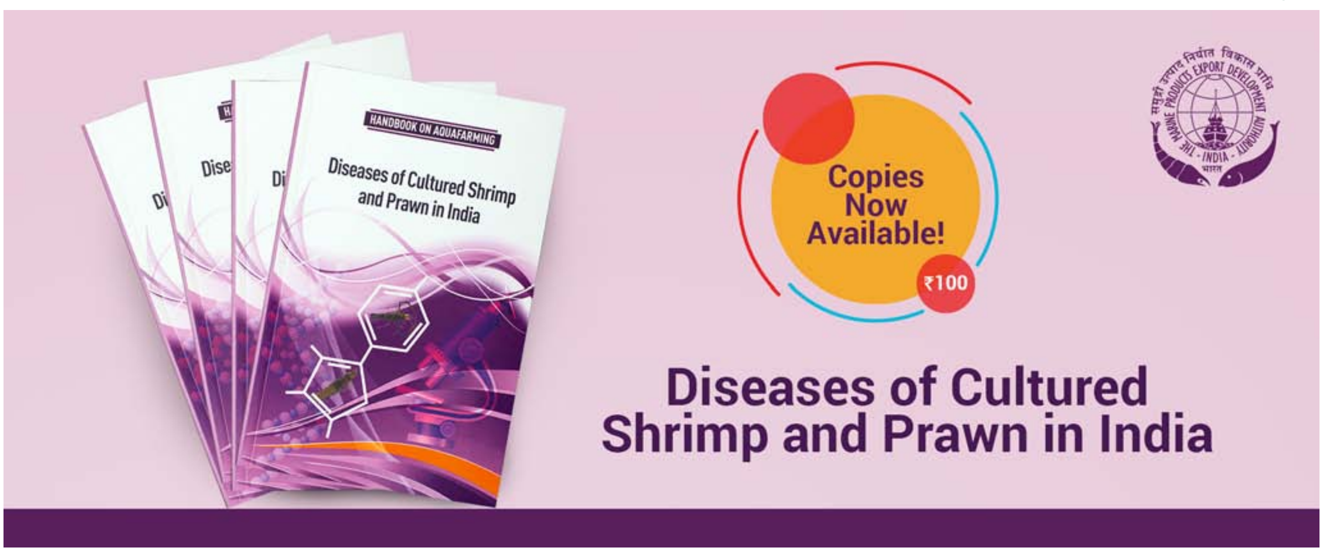

रोग-मुक्त श्रिम्प बीज पर पणधारी बैठक

श्री ए. कुमार, सीपी फीड लिमिटेड के प्रतिनिधि ने अपना अनुभव शेयर करते हुए।

कुंदापुरा में दिनांक 14 मई, 2019 को रोग मुक्त स्वस्थ श्रिम्प बीज उत्पादन और आपूर्ति के प्रमाणीकरण पर चर्चा करने हेतु एक पणधारी बैठक आयोजित की गई। बैठक में उडुपी और मैंगलोर जिलों के लगभग 75 श्रिम्प और मत्स्य कृषक, उद्यमी और जलकृषि व्यापारी भाग लिए और जलकृषि फार्मों में प्रतिबंधित प्रतिजैविकियों को निहित होने पर अपना विचार व्यक्त किया। श्रिम्प हैचरी संचालक और मालिक तथा प्रगतिशील श्रिम्पों का प्रतिनिधित्व श्री कृष्ण प्रसाद अदयनथी, मेसर्स पोपुलर अक्वा फार्म, टल्लारू; श्री गौतम पै, निदेशक, मेसर्स प्रिया हैचरी, मनकी; श्री प्रदीप शेट्टी, मेसर्स डीजे हैचरी एवं ब्रीडिंग फार्म, बैलूर और श्री श्रीधर हेडगे, श्रिम्प कृषक संघ, कोनी गाँव, कुंदापुरा ने किया।

श्री विजयकुमार यारगल, उप निदेशक, एमपीईडीए ने देश से प्रशीतित श्रिम्प निर्यात के सांख्यिकीय आंकड़ों पर तकनीकी प्रस्तुति दी, क्योंकि समुद्री निर्यात में प्रशीतित श्रिम्प का कुल 60 प्रतिशत योगदान है। उनकी प्रस्तुति में वियतनाम, थाईलैंड, ताइवान जैसे प्रतिस्पर्धी देशों से प्रशीतित श्रिम्प निर्यात और यूरोपीय संघ, अमेरिका और जापान जैसे क्षेत्रों को आयात करके खेपों को अस्वीकार के विवरण भी शामिल थे।

उन्होंने खेपों के अस्वीकार के कारण होने वाले आर्थिक नुकसान और अस्वीकृति के कारण और ऐसे अस्वीकारों से बचने के लिए सुझावों के बारे में भी बताया। उन्होंने सुचारू निर्यात के लिए आवश्यक सहयोग का विस्तार करने के लिए खेती और संबद्ध समुदाय के सहयोग की मांग की।

श्री गौतम पै, मेसर्स प्रिया हैचरी और श्री प्रदीप शेट्टी, मैसर्स डीजे हैचरी एंड ब्रीडिंग फार्म्स ने आश्वासन दिया कि वे आपूर्ति आदेशों की पुष्टि के अधीन कृषकों को प्रीमियम गुणवत्ता और अवशेष मुक्त बीज की आपूर्ति करने के लिए तैयार थे। कर्नाटक से संचालित हैचारियों ने अब तमिलनाडु या पांडिचेरी या आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जैसे बाहरी क्षेत्रों के नौपीली पर निर्भर हैं। उन्होंने उत्पादन में आवश्यक सहयोग बढ़ाने और कृषकों को प्रतिजैविकी और रोग मुक्त बीज की आपूर्ति के लिए भी सहमति व्यक्त की। उन्होंने कहा कि बीज की कीमत हैचरी की उत्पादन लागत के आधार पर तय की जा रही है और इसलिए, उच्च गुणवत्ता वाले बीज की कीमत थोड़ी अधिक होगी। एक अग्रणी कृषक श्री कृष्ण प्रसाद अदयनथी ने कुंदापुरा और करवार के तटीय क्षेत्रों में पूर्ण विकसित अक्वा प्रयोगशाला जैसे सुविधाएं प्रदान करने पर विचार करने के लिए और आंध्र प्रदेश और उड़ीसा द्वारा दी गई सुविधाओं की तर्ज पर श्रिम्प उत्पादन को बढ़ाने के लिए कृषकों को स्थानीय स्तर पर संचालित हैचरी से प्रतिस्पर्धी मूल्य पर रोग और अवशेष मुक्त बीज की समय पर आपूर्ति हेतु राज्य सरकार से अनुरोध किया।

श्री जी. रामर, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ने उच्च स्वास्थ्य प्रतिजैविकी मुक्त बीज उत्पादन के प्रमाणन पर एक प्रस्तुति दी। प्रस्तुति में उल्लेख किया गया कि चालू वर्ष के दौरान, 30 श्रिम्प हैचरी को रोग-मुक्त उच्च गुणवत्ता वाले बीज के उत्पादन के ग्रेड सिस्टम-आधारित प्रदर्शन द्वारा प्रमाणीकरण के लिए सम्मानित किए जाने की संभावना थी।

प्रमाणित हैचरी को एमपीईडीए की वेबसाइट में प्रचारित किया जाएगा, इस प्रकार कृषक समुदाय को अन्य अप्रमाणित हैचारियों के अलावा इन हैचारियों से बीज खरीदने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। प्रमाणन केवल दो वर्षों के लिए मान्य होगा। श्री रामर ने धन्यवाद ज्ञापित भी किया।

"हैचरी में प्रतिजैविकी मुक्त बीज उत्पादन के लिए प्रमाणन योजना" पर पणधारी बैठकें

श्री राजकुमार नाईक, उप निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल बैठक को संबोधित करते हुए।

एमपीईडीए के क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल द्वारा श्रिम्प हैचरी में प्रतिजैविकी मुक्त बीज उत्पादन के लिए प्रमाणन योजना पर सुझाव आमंत्रित करने हेतु दो पणधारी बैठक का आयोजन किया गया।

दिनांक 5 अप्रैल, 2019 को मुख्यालय में हुई बैठक में मई महीने के पहले या दूसरे सप्ताह के दौरान अलीबाग और पालघर जिलों में दो बैठकें आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इसकी तैयारी सिलसिले में, 'गुणवत्ता और प्रतिजैविकी मुक्त बीज के लिए हैचरी का प्रमाणन' पर दिनांक 24 अप्रैल, 2019 को महाराष्ट्र टाइम्स में एक सार्वजनिक विज्ञापन जारी किया गया और एमपीईडीए, आरजीसीए और नाक्सा की वेबसाइटों में पोस्ट किया गया।

9 मई 2019 को रायगढ़ जिले के रोहा तालुक के खजानी गाँव में आयोजित पहली बैठक में, श्री राजकुमार नायक, उप निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्री युवराज चौगुले, क्षेत्रीय उपायुक्त, कोंकण क्षेत्र, मात्स्यिकी विभाग, महाराष्ट्र और सुश्री. स्मितल कांबले, सहायक मात्स्यिकी विकास अधिकारी, अलीबाग, राईगढ़ आदि बैठक में उपस्थित थे, जिसमें जलकृषि सलाहकार सहित 32 पनधारियों ने भाग लिया।

बैठक के उद्देश्यों के बारे में जानकारी देते हुए, श्री राजकुमार नाइक ने यूरोपीय और यूएसए के विशेष संदर्भ में भारत के लिए निर्यात बाजार में प्रतिजैविकी मुद्दों की स्थिति और महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री युवराज चौगुले ने पणधारियों को श्रिम्प की कृषि के लिए रायगढ़ की क्षमता के बारे में जानकारी दी। श्री मंगेश पटवर्धन, एक श्रिम्प कृषक और रायगढ़ के सलाहकार ने श्रिम्प कृषि के अपने अनुभव को शेयर किया और रायगढ़ में एक श्रिम्प बीज हैचरी और रोग निदान के साथ-साथ मिट्टी और जल परीक्षण प्रयोगशाला की आवश्यकता भी व्यक्त की।

श्री मंगेश गावड़े, क्षेत्रीय पर्यवेक्षक, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने 'भारत में प्रमाणन की आवश्यकता क्यों है', 'प्रमाणन के उद्देश्य और गुंजाइश', 'प्रमाणीकरण मानकों के मार्गदर्शक सिद्धांत', 'हैचरी के लिए संचालन संबंधी दिशा-निर्देश' और 'प्रमाणन प्रक्रिया - लेखापरीक्षा के तीन स्तर' पर तकनीकी प्रस्तुतियाँ दीं।

पणधारियों की ओर से हैचरियों के मान्यता प्रक्रिया और

रायगढ़ जिले के खजनी में पणधारी की बैठक के प्रतिभागियों का दृश्य

प्रक्रिया को गति देना जैसे सुझाव दिया गया। यह सुझाव दिया गया कि यह उपभोग का समय नहीं होना चाहिए चूँकि एक हैचरी से कई चक्र और रियरिंग टैंक होंगे। समारोह का समापन करते हुए श्री अतुल रावसाहेब साठे, फील्ड पर्यवेक्षक, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने कृतज्ञता ज्ञापित किया।

महाराष्ट्र क्षेत्र के ठाणे और पालघर जिलों में कृषकों के लिए हैचरी प्रमाणन पर दूसरी पणधारी की बैठक दिनांक 13 मई, 2019 को डहाणू में आयोजित की गई।

श्री नरेश तांबड़ा, सहायक निदेशक, एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने पालघर क्षेत्र से आए मात्स्यिकी विभाग के अधिकारियों और पणधारियों का स्वागत किया। उन्होंने बैठक के उद्देश्यों की भी जानकारी दी और यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य यूएसए के विशेष संदर्भ के साथ भारत के निर्यात बाजार में प्रतिजैविकी मुद्दों की स्थिति और महत्व पर प्रकाश डाला।

श्रीमती पूजा सालवी, सहायक मात्स्यिकी विकास अधिकारी, पालघर ने पणधारियों को श्रिम्प कृषि में पालघर की क्षमता के बारे में समझाया। और इस तरह की एक बैठक आयोजित करने हेतु एमपीईडीए पहल की सराहना की।

पालघर के श्रिम्प कृषकों के प्रतिनिधि श्री जगन्नाथ वझे ने श्रिम्प कृषि के क्षेत्र में अपने अनुभव को साझा किया और एलिसा लैब, श्रिम्प बीज हैचरी और रोग निदान के साथ-साथ मिट्टी और जल परीक्षण प्रयोगशाला की आवश्यकता व्यक्त की। उन्होंने रोगों के एकत्रीकरण और निदान हेतु बीज, जल और मिट्टी की गुणवत्ता परीक्षण के लिए एक मोबाइल लैब स्थापित करने का भी सुझाव दिया। प्रमाणित बीज की आवश्यकता को डहाणू के श्रिम्प कृषकों के प्रतिनिधि श्री तन्मय बारी ने दोहराया। उन्होंने प्रमाणित हैचरी में उत्पादित ब्रूड स्टॉक या बीज के प्रत्येक बैच के बार-कोडिंग का सुझाव दिया। उन्होंने "गुणवत्ता और प्रतिजैविकी मुक्त बीज उत्पादन और हैचरी का प्रमाणीकरण", इस मुद्दे को उठाने के लिए एमपीईडीए के कदम की भी सराहना की।

श्री अतुल साठे, क्षेत्रीय पर्यवेक्षक, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने 'भारत में प्रमाणन की आवश्यकता क्यों है', 'प्रमाणन का उद्देश्य और दायरा', 'प्रमाणन के लिए मानकों के मार्गदर्शक सिद्धांत', 'हैचरी संचालन के लिए दिशानिर्देश', 'प्रमाणन की प्रक्रिया - लेखा परीक्षा के तीन स्तर, पूर्वप्रमाणन/ पूर्व योग्यता लेखा परीक्षा, प्रमाणन लेखा परीक्षा/समिति लेखापरीक्षा' आदि जैसे विषयों पर तकनीकी प्रस्तुतियाँ दीं।

बैठक, जिसमें 50 हितधारकों ने भाग लिया ने ब्रूड स्टॉक के बार कोडिंग और प्रमाणित हैचरी में उत्पादित बीज का प्रत्येक बैच, ब्रूडर को एक बार फिर से बीज उत्पादन के लिए इस्तेमाल नहीं करने और ब्रूडर के लिए नियंत्रण विधि या प्रक्रिया, हैचरी में टैंकों की निगरानी जैसे सुझाव दिया। श्री अतुल रावसाहेब साठे, क्षेत्र पर्यवेक्षक, क्षेत्रीय प्रभाग, पनवेल ने कार्यवाही समाप्त करते हुए धन्यवाद प्रस्तावित किया।

पालघर जिले के डहाणू में आयोजित पणधारी की बैठक के प्रतिभागी

श्रिम्प हैचरी संचालकों के लिए 'पणधारी' बैठक

दर्शकों को संबोधित करते हुए श्री पी. अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए

एमपीईडीए ने प्रस्तावित हैचरी प्रमाणन योजना पर हैचरी संचालकों की राय और सुझाव एकत्र करने के लिए दिनांक 15 मई, 2019 को पांडिचेरी में पणधारियों की परामर्श बैठक बुलाई। बैठक में तमिलनाडु क्षेत्र के सभी हैचरी संचालकों को आमंत्रित किया गया और बैठक में अखिल भारतीय श्रिम्प हैचरी संघ के अध्यक्ष और सचिव सहित बयालीस हैचरी संचालक भाग लिए।

श्री सी. विल्सन, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, नागपट्टनम के स्वागत भाषण और परिचयात्मक टिप्पणी के साथ बैठक शुरू हुई। श्री पी. अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए ने जलकृषि से प्रतिजैविकी को खत्म करने की जरूरतों पर और इसके लिए एमपीईडीए द्वाराउठाए गए कदम पर प्रस्तुतिकरण दीं। श्री विश्वकुमार, सहायक निदेशक, एमपीईडीए ने हैचरी प्रमाणन योजना के विवरण पर प्रस्तुति दी और हैचरी संचालकों को अपने सुझाव व्यक्त करने हेतु आमंत्रित किया।

प्रस्तुतियों के बाद, प्रतिभागियों को श्री पी. अनिलकुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए के साथ अपने संदेह को स्पष्ट करने का मौका मिला। हैचरी संचालकों ने हैचरी में उपयोग किए गए इनपुट के माध्यम से प्रतिजैविकियों के प्रवेश को रोकने के लिए प्रमाणन योजना में प्रावधान हेतु सुझाव दिए।

प्रतिभागियों का दृश्य

रत्नागिरी में आयोजित एचएसीसीपी की प्रथम बुनियादी प्रशिक्षण

एचएसीसीपी प्रशिक्षण का उद्घाटन सत्र

एमपीईडीए के उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने दिनांक 9 से 12 अप्रैल, 2019 तक रत्नागिरी में 'समुद्री खाद्य एचएसीसीपी' पर, अपनी तरह का पहला, एक चार दिवसीय बुनियादी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम क्षेत्र में समुद्री खाद्य प्रसंस्करण सुविधाओं में काम करने वाले प्रौद्योगिकीविदों, संयंत्र प्रबंधकों और पर्यवेक्षकों के लिए आयोजित किया गया था और इसमें रत्नागिरि, सिंधुदुर्ग और मुंबई में विभिन्न समुद्री खाद्य प्रसंस्करण संयंत्रों में काम करने वाले 26 उम्मीदवारों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम दिनांक 9 अप्रैल को एक उद्घाटन सत्र के साथ शुरू हुआ, जिसमें डॉ. टी. आर. जिबिनकुमार, उप निदेशक, एमपीईडीए, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में उम्मीदवारों का स्वागत किया। श्री एस.एस. शाजी, उप निदेशक (गु. नि.), एमपीईडीए मुख्यालय ने परिचयात्मक टिप्पणी दी और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम की समग्र संरचना के बारे में बताया। बैठक में श्री वी. विनोद, सहायक निदेशक (गु.नि.), एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची और श्री वानिया किशोर, तकनीकी अधिकारी (गु.नि.), एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई उपस्थित थे। श्री षाजीजॉर्ज, सहायक निदेशक, उप क्षेत्रीय प्रभाग, रत्नागिरी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रशिक्षण सत्र हुए जिसमें एचएसीसीपी से परिचय, पूर्व-आवश्यक कार्यक्रम और प्रारंभिक चरण कार्यक्रम और प्रारंभिक कदम, सीजीएमपी और एसएसओपी जैसे विषयों को शामिल किया गया। पहले दिन एसएसओपी पर कार्य सत्र के साथ संपन्न हुआ। दूसरे दिन के सत्र में जोखिम, जोखिम विश्लेषण और नियंत्रण उपाय, महत्वपूर्ण नियंत्रण बिंदु, महत्वपूर्ण सीमा, सीसीपी निगरानी और सुधार करने हेतु काम जैसे विषयों को शामिल किया गया। दिन के अंत में दूसरे दिन चर्चा किए गए विषयों को कवर करने वाला कार्य सत्र आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण के तीसरे दिन, सत्र में सत्यापन, रिकार्ड का रख-रखाव, यूएस समुद्री खाद्य विनियमन, राष्ट्रीय मानक/यूरोपीय संघ के विनियम और पारगम्यता जैसे विषयों को कवर किया गया जिसके बाद तीसरे दिन के विषयों में कार्य सत्र था। कार्यक्रम के अंतिम दिन, एचएसीसीपी मैनुअल तैयार करने के लिए एचएसीसीपी योजना विकास और दिशानिर्देश पर एक सत्र आयोजित किया गया। इसके बाद, प्रशिक्षुओं को चार समूहों में विभाजित किया गया और और विशिष्ट उत्पादों पर एसएसओपी, एचएडबल्यू और एचएसीसीपी योजना तैयार करने का कार्य दिया। उसके बाद समूह के प्रतिनिधियों ने अपने द्वारा तैयार किए गए मामले की व्यक्तिगत प्रस्तुतियाँ दीं और प्रशिक्षुओं के बीच इन पर गहन चर्चा हुई और प्रशिक्षकों द्वारा दिए गए सुझावों को शामिल किया गया।

सीफूड एचएसीसीपी पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 12 अप्रैल को एक समापन समारोह के साथ संपन्न हुआ, जहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने वाले उम्मीदवारों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए
श्री एस. एस. षाजी, उप निदेशक (गु. नि.), एमपीईडीए

एक दशक के बाद, केरल में हुई ब्लैक टाइगर श्रिम्प वापसी

फ़ाइल फोटो

अधिकारियों ने कहा कि एमपीईडीए द्वारा अपने बीजों की व्यापक बिक्री करने पर ब्लैक टाइगर श्रिम्प के उत्पादन को पुनर्जीवित करने के प्रयासों को उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली है। ब्लैक टाइगर श्रिम्प के उत्पादन में एक दशक की स्लाइड को समाप्त करते हुए, केरल शीर्ष स्वस्थ समुद्री खाद्य की वापसी का अनुभव कर रहा है, चालू वर्ष के प्रारम्भ में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहल के लिए धन्यवाद।

केंद्रीय सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत काम करने वाले वैधानिक निकाय के अधिकारियों के अनुसार अपने बीजों की व्यापक बिक्री पर ब्लाक टाइगर श्रिम्प उत्पादन को पुनर्जीवित करने के एमपीईडीए के प्रयासों को उत्साहवर्धक परिणाम मिल रहे हैं।

अधिकारियों ने कहा कि पिछले 100 दिनों से बीजों की बड़े पैमाने पर बिक्री से कृषकों में रोग मुक्त किस्म को बढ़ाने में दिलचस्पी बढ़ रही है।

कोच्ची में मुख्यालय एमपीईडीए ने दिनांक 18 फरवरी को वल्लरपाडम में अपने नए बहुप्रजातीय जलकृषि कॉम्प्लेक्स (एमएसी) से ब्लैक टाइगर श्रिम्प बीजों की आपूर्ति करने लगा। एमपीईडीए के अध्यक्ष के.एस. श्रीनिवास द्वारा केरल के पूर्व पुलिस महानिदेशक होर्मिस तरकन, एक प्रगतिशील श्रिम्प कृषक को एक लाख बीज सौंपकर उद्घाटन बिक्री किया गया।

दिनांक 17 जून 2019 को, श्री श्रीनिवास ने कहा, नौ एकड़ मैक से आपूर्ति की गई ब्लैक टाइगर श्रिम्प राज्य के विभिन्न हिस्सों में, 'उत्कृष्ट' प्रदर्शन कर रही है।

हमें पता था कि ब्लैक टाइगर किस्म का उत्पादन बढ़ने से भविष्य में भारत के श्रिम्प निर्यात को बढ़ावा मिल सकता है। हम इसके शुरुआती संकेत देख रहे हैं, उन्होंने कहा। हाल ही में, मैं ने हमारी सुविधा के बीजों के क्षेत्र प्रदर्शन को समझने के लिए कुछ जलकृषि फार्मों का दौरा किया। हमारे बीज अच्छी तरह बढ़ रहा है। कृषकों की टिप्पणी 'उत्साहजनक' है, उन्होंने कहा।

"वे (बीज) 38 ग्राम का औसत वजन प्राप्त किए, गुणवत्ता के लिए धन्यवाद। मुझे 50 सेंट के क्षेत्र से 10,000 किलोग्राम का स्टॉक करके 90 दिनों में 260 किलोग्राम श्रिम्प मिला। वर्तमान में, हम और 90,000 बीजों का पालन कर रहे हैं, उन्होंने कहा। उन्होंने कहा कि पिछले तीन वर्षों से लगातार फसल बर्बादी का सामना करने के विपरीत है।

7.26 करोड़ रुपये का मैक, जिसका उद्घाटन 8 दिसंबर, 2018 को किया गया था, जिसमें 20 मिलियन ब्लैक टाइगर श्रिम्प बीजों की वार्षिक उत्पादन क्षमता के साथ एक हैचरी शामिल है, इसके अलावा चार प्रकार की फिन मछलियां भी शामिल हैं। सी वी मैथ्यू, एक अन्य किसान जो 16 साल से अपने मूल कुंमबालंगी उपनगर में श्रिम्प की खेती कर रहे हैं। मैक से ब्लैक टाइगर के बीज ने पहले 50 दिनों में 25 ग्राम आकार प्राप्त किया।

उन्होंने कहा कि 86 दिनों में, जलीय जानवर औसतन 40 ग्राम तक पहुंच गए। मैंने अपनी फसल की इस तरह की वृद्धि दर का कभी अनुभव नहीं किया है। वल्लारपाडम हैचरी से लिए गए बीजों का कल्चर करने से डाउन स्टेट कोल्लम और उत्तरी मलबार के कण्णूर के कृषकों से कोई अलग प्रतिक्रिया नहीं मिली है, एमपीईडीए के उच्च अधिकारियों ने कहा।

वर्ष 2010 से यह ब्लैक टाइगर श्रिम्प, दक्षिण-पूर्व एशिया के एक स्थानिक प्रजाति, जोकि भारत में प्रमुख रूप से कल्चर की जाने वाली श्रिम्प मद अपनी पारंपरिक प्रतिष्ठा में मंदी का सामना करना शुरू कर दिया। इसके बाद ही राज्य के जलकृषि किसानों ने श्रिम्प के विदेशी वन्नामी प्रजातियों को बड़े पैमाने पर उगाने पर ध्यान देना शुरू किया।

- *www.thehindu.com*

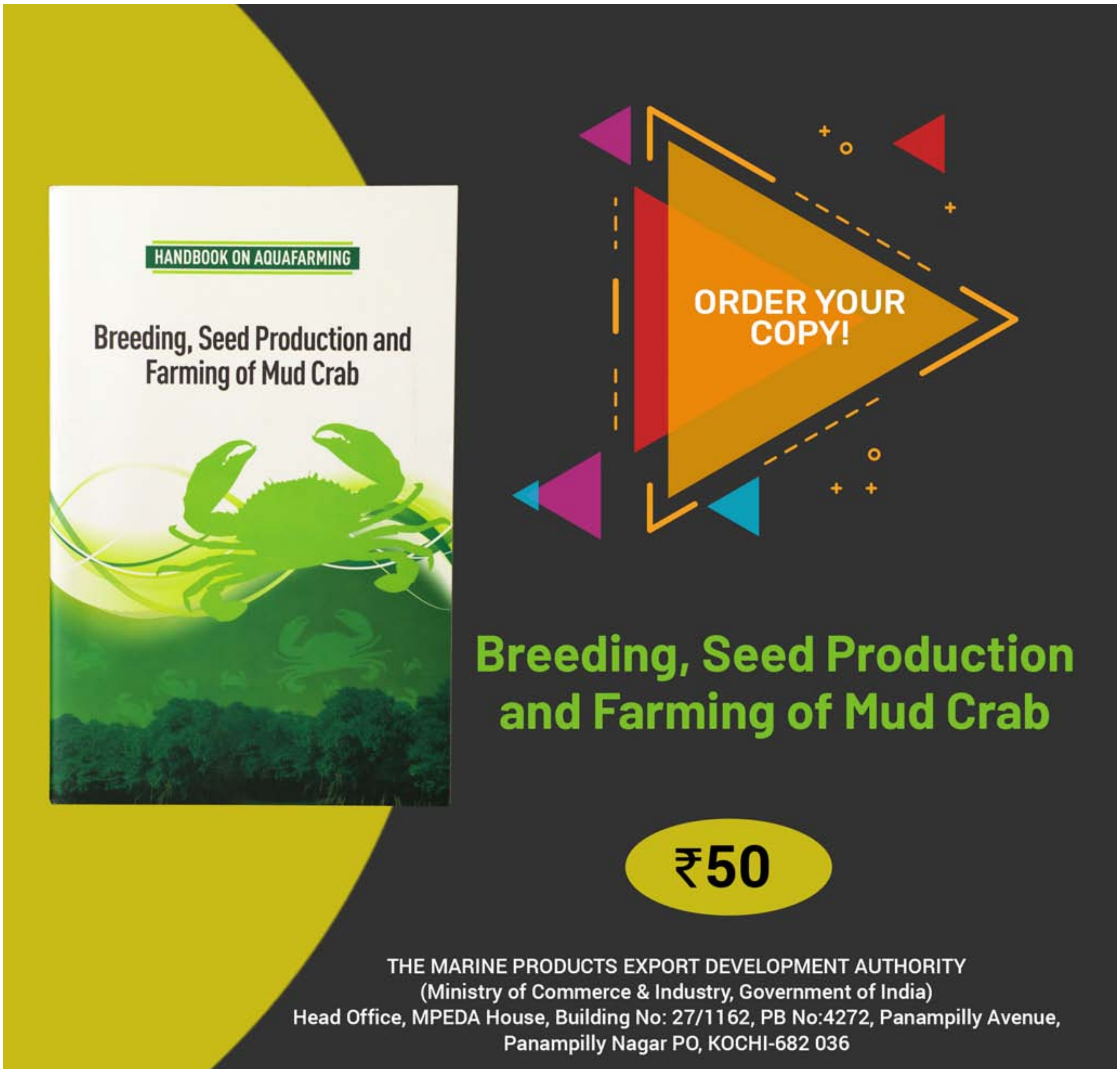

वैश्विक मत्स्य उत्पादन में भारत का 6.3% हिस्सा : मात्स्यिकी विभाग

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है क्योंकि वैश्विक मत्स्य उत्पादन का 6.3 प्रतिशत भारत से हो रहा है, दिनांक 17 जून 2019 को मात्स्यिकी विभाग द्वारा एक विज्ञप्ति में सूचित किया गया।

यह भी कहा कि 14.5 मिलियन मछुआरों को बनाए बनाए रखे हुए देश की मात्स्यिकी क्षेत्र 7 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है।

रजनी सेखरी सिबल, सचिव, मात्स्यिकी विभाग को उद्दृत करते हुए कहा कि भारतीय विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र (ईईजेड) में ट्यूना और ट्यूना जैसी प्रजातियों के दोहन की बहुत बड़ी संभावना है।

हिंद महासागर ट्यूना आयोग (आईओटीसी) के 23 वें सत्र के अपने उद्घाटन भाषण में सिबल ने कहा कि भारतीय ईईजेड का 30 प्रतिशत अंडमान, निकोबार और लक्षद्वीप द्वीप समूह में फैला हुआ है, लेकिन केवल 1 प्रतिशत में ही ट्यूना मत्स्य का उत्पादन है।

आईओटीसी सदस्य देशों के बीच क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए, अधिकारी ने कहा कि ट्यूना के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण और चिरस्थायी प्रबंधन की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आईओटीसी को यह सुनिश्चित करना है कि विकसित और विकासशील देशों के बीच एक स्तरीय खेल का मैदान हो।

सिबल ने कहा कि मात्स्यिकी भारत के एक उभरने वाला क्षेत्र है,व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य वैश्विक ट्यूना बाजार पर विचार करते हुए, जो वर्ष 2017 में 11.38 बिलियन अमरीकी डालर था और वर्ष 2023 तक यूएसडी 13.75 बिलियन तक पहुँचने का अनुमान है।

-www.business-standard.com

सीएमएफआरआई समुद्री शैवाल से उच्च-रक्तचापरोधी उत्पाद विकसित करता है

समुद्री जीवों की औषधीय संभावनाओं के उपयोग में एक प्रमुख विकास के रूप में, उच्च रक्तचाप से निपटने के लिए अब केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफ़आरआई) ने समुद्र से एक न्यूट्रास्यूटिकल उत्पाद लेकर आया है। उक्त उत्पाद, कडाल्मिन टीएम एंटी हैपरटेंसिव एक्स्ट्राक्ट (कडाल्मिन टीएम एएचई), समुद्री शैवाल से विकसित किया गया है, जो आमतौर पर भारतीय तटीय जल में उपलब्ध है और अपने असाधारण औषधीय गुणों के लिए जाने जाते हैं।

इस उत्पाद को विकसित करने के लिए समुद्री शैवाल से अगुआ किए गए बायोएक्टिव फार्माकोफोर का उपयोग किया गया, उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए मुह से ले सकते हैं। यह सीएमएफआरआई द्वारा विकसित पोषक उत्पादों की श्रृंखला में छठा उत्पाद है। संस्थान ने पहले से ही मधुमेह, गठिया, कोलेस्ट्रॉल और हाइपोथायराइड जैसी बीमारियों के लिए प्राकृतिक उत्पादों का विकास और व्यवसायीकरण किया है।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग और महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने सीएमएफआरआई में आयोजित एक समारोह में उत्पाद का विमोचन किया।

''अर्क में चयनित समुद्री शैवाल से एक पेटेंट तकनीक द्वारा लिए गए 100 प्रतिशत प्राकृतिक समुद्री बायोएक्टिव तत्व होते हैं और इससे 400 मिलीग्राम कैप्सूल में उपलब्ध कराया जाएगा। विस्तृत प्रीक्लिनिकल परीक्षणों द्वारा प्रमाणित इस न्यूट्रास्यूटिकल का कोई दुष्प्रभाव नहीं है। ''यह उच्च रक्तचाप के प्राकृतिक उपचार के रूप में समुद्री शैवाल से शत-प्रतिशत प्राकृतिक समुद्री बायोएक्टिव अवयवों द्वारा बनाया गया एकमात्र उत्पाद है'', डॉ. काजल चक्रवर्ती, सीएमएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक, जिन्होंने उत्पाद विकसित किया, ने कहा।

डॉ. गोपालकृष्णन, निदेशक, आईसीएआर-सीएमएफआरआई ने कहा कि सीएमएफ़आरआई के साथ रुचि की अभिव्यक्ति द्वारा इस उत्पाद को बाजार में मूल्यवान बनाने हेतु उद्यमियों और स्टार्ट-अप्स का स्वागत करते हैं। ''संस्थान गैरउपयोगित समुद्री शैवाल से और अधिक स्वास्थ्य उत्पाद विकसित करने की प्रक्रिया में है। तटीय समुदायों के लिए एक आजीविका विकल्प के रूप में भारतीय तटों पर समुद्री शैवाल की खेती को मानकीकृत और बढ़ावा देने का प्रयास जारी है। यह दुबले मौसम के दौरान मछुआरों के लिए आय में गिरावट की क्षतिपूर्ति करने की उम्मीद है,'' उन्होंने कहा।

-www.economictimes.indiatimes.com

श्रिम्प कृषि को प्रतिजैविकी से बचना चाहिए, विशेषज्ञ कहते हैं

शाजी बेबी जॉन, देश के श्रिम्प जलकृषि के एक अग्रणी के अनुसार, जलकृषि आधारित श्रिम्प कृषि, जो देश से यूएसडी 7 बिलियन समुद्री उत्पादों के निर्यात का मुख्य आधार है, को किसी भी प्रतिजैविकियों का उपयोग किए बिना एक चिरस्थाई कृषि कल्चर पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि मुख्य निर्यात गंतव्यों में गुणवत्ता मानक प्रतिदिन सख्त होता जा रहा है और "हमें उक्त स्थिति का सामना करने हेतु तैयार रहने की ज़रूरत है"।

"यूरोपीय संघ के देशों ने पहले ही निर्यातकों को निर्देश दिया है कि खेपों में प्रतिजैविकी की उपस्थिती किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और भविष्य में ऐसी खेपों को अस्वीकार कर दिया जाएगा", षाजीने कहा, जो किंग्स ग्रुप ऑफ़ कंपनीज़ के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक भी हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका और जापान जैसे अन्य प्रमुख निर्यात गंतव्य भी जल्द ही ऐसे गुणवत्ता मानकों को अपनाएंगे। भारतीय समुद्री उत्पाद उद्योग के लिए एक उज्ज्वल भविष्य का अनुमान लगाते हुए, उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र को नवीनतम प्रौद्योगिकी मानकों को अपनाने के साथ एक चिरस्थाई मॉडल पर नियमबद्ध करने की आवश्यकता है"।

"हम चीन केपी ले सकते हैं, उचित योजना और प्रौद्योगिकी स्वीकारण और उत्पादों के विविधीकरण के साथ, जलकृषि उत्पादन में वैश्विक नेता बना है, षाजी ने कहा।

उन्होंने आगे कहा कि केंद्र सरकार द्वारा मात्स्यिकी विभाग का गठन इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है। चीन में जलकृषि का उत्पादन 49 मिलियन टन होता है जबकि भारत में 6 मिलियन टन से कम है।

उन्होंने कहा कि चिरस्थाई जलकृषि विकास (टीयूएफएसए) के लिए एक प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि वक्त की जरूरत है। टीयूएफ़एसए एक एकीकृत प्रबंधन दृष्टिकोण से युक्त है जिसमें तटीय और अंतर्देशीय जलीय कृषि शामिल है जो ग्रामीण आबादी की आजीविका, रोजगार की संभावनाओं और प्रोटीन के सेवन को बेहतर बनाने में एक पूरक होंगे।

किंग्स ग्रुप ने हाल ही में तमिलनाडु में चिप्पिकुलम, तूतीकोरिन में एसटीक्यूसी (चिरस्थाई, अनुमार्गणीय योग्य, गुणवत्ता प्रमाणित) जलकृषि हब मॉडल प्रारम्भ किया, जो उत्तरदायित्वपूर्वक रूप से विकसित मतस्यों को सुनिश्चित करता है, जिसका पिछला इतिहास को पता लगाया जा सकता है। "हम अपने आरएंडडी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी को कृषकों को हस्तांतरित करके बड़े क्षेत्रों में इसका विस्तार कर रहे हैं। यह ब्रूड स्टॉक उपलब्धता से सीफ़ूड निर्यात की मूल्य चेन के संपूर्ण पहुँच को कवर करता है", षाजी ने कहा।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में जैविक नियंत्रण सहित ओपन-साइकल री-सर्कुलेटिंग जलकृषि प्रणाली और एक्वा-मिमिक्री एक रोग मुक्त बहु-ट्रॉपिक कृषि प्रथा की स्थापना आदि शामिल हैं।

-www.deccanchronicle.com

'वन्नामी' जलकृषि निर्यात में राज्य को एक अग्रणी केंद्र बनाएँगे

हालांकि, समुद्री खाद्य वृद्धि पिछले दो वर्षों के दौरान में दर्ज 20 प्रतिशत से, वर्ष 2019-20 के दौरान घटकर 17 प्रतिशत होने का अनुमान है, आंध्र प्रदेश से हो रहे वन्नामी निर्यात राज्य को जलकृषि निर्यात का एक प्रमुख केंद्र बना देगा।

समुद्री खाद्य निर्यात की वृद्धि में हुई कमी मुख्य रूप से अधिमान्य व्यापार उपचार को वापस लेने से यूएसए के समुद्री खाद्य आयात निगरानी कार्यक्रम के तहत इसके द्वारा लगाए गए सख्त दिशा-निर्देश और एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने के कारण देश के निर्यातकों को नए बाजारों का पता लगाने के लिए मज़बूर करने से हुआ है।

"वन्नामी (व्हाइट लेगपैर श्रिम्प), एक विदेशी प्रजाति जो अपने स्वाद और कम लागत के लिए जानी जाती है, इसका निर्यात बाजार में सबसे अधिक मांग है और हम इसे संवर्धित करने में हम अत्यंत सही प्रयत्न कर रहे हैं, भारतीय मत्स्यन उद्योग संघ के अध्यक्ष वाई.जी.के. मूर्ति ने द हिंदू को बताया।

आंध्र प्रदेश, विशेष रूप से, कृष्णा, पश्चिम गोदावरी और पूर्वी गोदावरी जिले, देश के जलकृषि का 25 प्रतिशत हिस्सा ले रहे हैं। यहाँ श्रिम्प कृषि होती है, यहाँ से वर्ष 2018 में

300,000 टन से अधिक प्रशांत व्हाइट टेल या वन्नामी का उत्पादन हुआ है। समुद्री खाद्य निर्यात में भी राज्य का स्थान उच्च स्थान है, जिसमें श्रिम्प निर्यात लगभग 95 प्रतिशत है।

“आंध्र प्रदेश सरकार श्रिम्प कृषि को दीर्घकालिक चिरस्थाई उद्योग बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इसलिए, कई मायनों में, यह उन गलतियों से बचा है, जो अन्य राज्यों, विशेष रूप से तमिलनाडु ने अनियंत्रित श्रिम्प कृषि को जगह देने की अनुमति जैसे गलतियों से बचा है। आंध्र प्रदेश ने नए श्रिम्प फार्मों को विनियमित करने साथ ही अवैध हैचारियों को बंद करने के लिए कदम उठाए हैं, पुष्कर मुकेवार, ड्रिप कैपिटल के सह-संस्थापक और सह-सीईओ, जो एसएमई निर्यातकों को एक आंकड़ा और प्रौद्योगिकी संचालित कार्यशील पूंजी समाधान प्रदान करता है, ने कहा।

गुणवत्ता में सुधार हेतु कदम

उन्होंने कहा कि राज्य के अधिकारी केंद्रीय अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे थे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ब्रूड-स्टॉक दूषित न हो। श्रिम्प कृषि को और अधिक प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार करने में मदद करने हेतु राज्य ब्लॉक चेन सहित प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की योजना बना रहा था।

श्री मुकेवर ने कहा कि विजाग समुद्री खाद्य निर्यात बंदरगाहों के मामले में शीर्ष स्थान पर था। हालांकि, विज़ाग मत्स्यन बंदरगाह को आधुनिक और उन्नत बनाने की सरकार की योजना इस स्थिति को प्रभावित कर सकती है और शहर को समुद्री खाद्य निर्यात में एक वैश्विक अग्रणी बना सकता है।

मुसीबत में

उन्होंने कहा कि असमान प्रक्रियाओं और प्रतिजैविकियों के उच्च स्तर का उपयोग से भारतीय श्रिम्प अमेरिकी और यूरोपीय प्राधिकारियों के साथ मुसीबत में पड़ सकता है। राज्य सरकारें अब श्रिम्प कृषि में गुणवत्ता मानकों को बनाए रखने में मदद करने हेतु प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रही हैं। इस व्यवसाय में कंपनियाँ आपूर्ति श्रृंखला के सुधार और प्रतिजैविकियों और अन्य रसायनों के अति प्रयोग को कम करनेके लिए कदम उठा रही थीं। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों ने श्रिम्प कृषि करने के लिए और अधिक कंपनियों को प्रोत्साहित करने हेतु श्रिम्प हैचरी के लिए भूमि प्रदान कर रहे हैं।

- www.thehindu.com

कृषकों को बम्पर फसल - सीएमएफ़आरआई के तहत मसल उपज

पिछले साल की बाढ़ के एक बड़े झटके के बाद, एरणाकुलम जिले के मूत्तकुन्नम के कृषकों को केंद्रीय समुद्री मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीएमएफआरआई) के मार्गदर्शन में मसल्स की भरपूर फसल मिली है। इस क्षेत्र में पाँच स्वयं सहायता समूहों ने कुल 6.5 टन मसल्स की उपज ली, जिसमें पाँच कृषि इकाइयाँ थीं। कृषक- ज़्यादातर महिलाएं हैं - जनवरी में पांच मीटर प्रत्येक चौड़ाई और लंबाई के साथ बांस से बने ढांचे का उपयोग करके कृषि प्रारंभ की।

कृषक, जिन्होंने एक अतिरिक्त आजीविका के विकल्प के रूप में द्विकपाटी कृषि कर रहे थे, को पिछले साल की विनाशकारी बाढ़ के कारण गंभीर नुकसान हुआ। उनकी सीप कृषि इकाइयाँ पूरी तरह से नष्ट हो गई। वे इससे भी चिंतित थे कि बाढ़ के बाद जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन मसल्स फार्मिंग को प्रभावित कर सकता है। लेकिन, किसानों को इस बार अच्छी फसल से राहत मिली है और पिछली बार हुए नुकसान की क्षतिपूर्ति की उम्मीद है।

5 महीने तक चलने वाली कृषि को सीएमएफआरआई के मोलस्कैन मात्स्यिकी प्रभाग के मार्गदर्शन में किया गया था। हार्वेस्ट के बाद उत्पादन का निर्मलीकरण किया गया, उपभोग के लिए उपयोग किए जाने से पहले उन्हें अच्छे शुद्ध समुद्री जल प्रदान करके मसल के गिल और गट से दूषित पदार्थों को बाहर निकालने की एक वैज्ञानिक प्रक्रिया, जिसका भी विकास सीएमएफ़आरआई द्वारा किया गया था।

मसल्स प्रोटीन, लिपिड, कार्बोहाइड्रेट, खनिज (कैल्शियम, लोहा, तांबा, जस्ता, फास्फोरस) और विटामिन से भरपूर होते हैं।

- www.thehindubusinessline.com

www.mpeda.gov.in

There's no seafood as Irresistible as Indian Seafood

From the sparkling Indian seas comes the finest seafood in the world. Enjoy it in abundance throughout the year.

You haven't tasted the best seafood, if you haven't tasted Indian seafood.

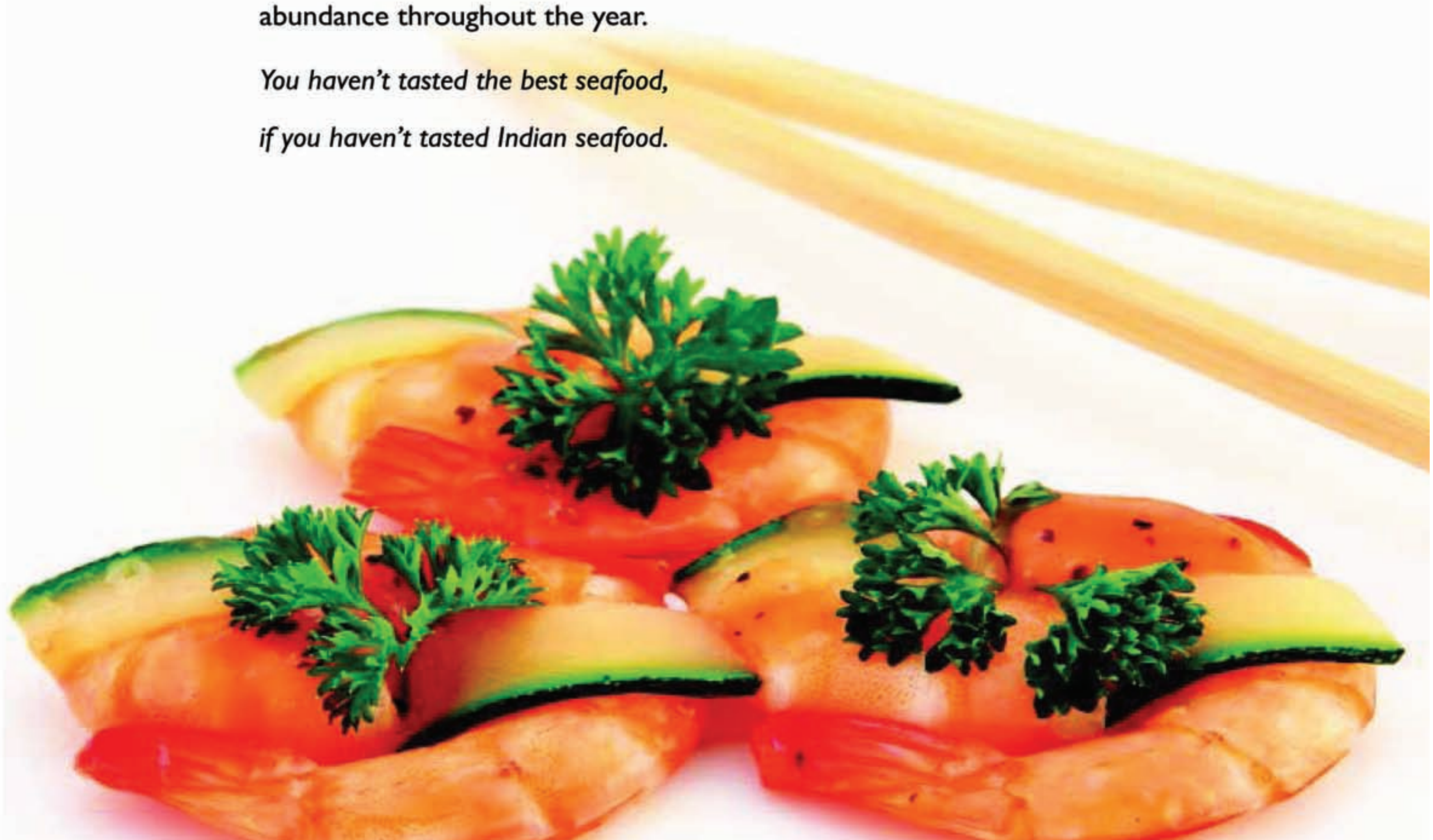

The Marine Products Export Development Authority

(Ministry of Commerce & Industry, Government of India)

MPEDA House, Panampilly Avenue, Kochi - 682 036, Kerala, India

Phone: +91 484 2311979 Fax: +91 484 2313361 E-mail: ho@mpeda.gov.in

ट्यूना मत्स्यन में इक्विटी सुनिश्चित करें, भारत आईओटीसी से कहता है

भारत ने हिंद महासागर ट्यूना आयोग, एक वैश्विक ट्यूना प्रबंधन संघ, छोटे देशों की आवाज़ों को सुनने हेतु इक्विटी और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुनिश्चित करने के लिए कहा।

भारत, जो वैश्विक ट्यूना व्यापार में एक छोटा खिलाड़ी है, ने महसूस किया कि वैश्विक निकाय को एक स्तर के खेल के मैदान की सुविधा प्रदान करनी चाहिए, जिससे छोटे खिलाड़ी क्षमता का दोहन कर सकें। एक विशाल समुद्र तट और समुद्र में अनन्य आर्थिक क्षेत्रों के होने के बावजूद, देश को ट्यूना अवसर का दोहन करना बाकी है।

आईओटीसी बैठक

यहाँ आयोजित आईओटीसी के 23 वें सत्र को संबोधित करते हुए, रजनी सेखरी सीबल, सचिव (मात्स्यिकी), भारत सरकार, ने कहा, विकासशील देशों के लिए बड़े खिलाड़ियों के साथ मुक़ाबला करना कठिन होगा। उनके ट्यूना मत्स्यन जहाज लगभग फ़्लोटिंग कारखानों की तरह हैं, जो कि पकड़ का इसमें ही इनहाउस प्रसंस्करण एवं पैकिंग होता है।

वर्ष 2017 में ट्यूना और ट्यूना जैसी प्रजातियों का वैश्विक बाजार आकार 11.38 बिलियन डॉलर था। यह 2023 तक 3.2 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ 13.75 बिलियन डॉलर तक बढ़ने का अनुमान है" उसने कहा। दिनांक 9 जून से यहां शुरू हुआ सत्र 21 जून को संपन्न होगा। आईओटीसी, जिसमें 31 सदस्य देश हैं, सदस्य देशों और अन्य पणधारियों द्वारा किए गए मुद्दों और प्रस्तावों पर चर्चा करता है।

आरोपित अत्यधिक मत्स्य पकड़

इस क्षेत्र में काम कर रहे ब्लू मरीन फाउंडेशन जैसे पर्यावरण कार्यकर्ता और संगठन ने उपभोक्ताओं से हिंद महासागर से खरीदे गए पीलेफिन ट्यूना की खपत को से बचाने के लिए कह रहा है। वे कहते हैं कि ट्यूना प्रजाति का अधिकतम पकड़ हो रहा है और यह टूटने की कगार पर है।

"मात्स्यिकी प्रबंधकों को हिंद महासागर के येल्लोफिन की रक्षा के लिए कार्य करना चाहिए। हिंद महासागर के येल्लोफिन की स्थिति के बारे में वैज्ञानिक प्रमाण अच्छी तरह से प्रलेखित और विवेचनात्मक है", अंतर्राष्ट्रीत समुद्रीखाद्य चिरस्थाई प्रतिष्ठान (आईआईएसएफ़) ने कहा।

आईओटीसी सम्मेलन को चिह्नित करने के लिए जारी एक बयान में, यह कहा कि आईओटीसी के पास प्रबंधन उपायों को अपनाने की शक्ति है जो इस स्टॉक का पुनर्निर्माण करेंगे।

- *www.thehindubusinessline.com*

THE MARINE PRODUCTS EXPORT DEVELOPMENT AUTHORITY (Ministry of Commerce & Industry, Government of India)
Head Office, MPEDA House, Building No: 27/1162, PB No:4272, Panampilly Avenue, Panampilly Nagar PO, KOCHI-682 036

आईसीएआर-सीआईबीए ने स्वच्छ भारत के तहत 'वेल्थ टू वेल्थ' की अवधारणा के रूप में पप्लांकटन प्लस, मत्स्य अपशिष्ट से एक मूल्य वर्धित उत्पाद के तकनीक का व्यावसायीकरण करता है।

मत्स्य बाज़ारों से लिए गए मत्स्य अपशिष्ट से प्लैंकटनप्लस के उत्पादन के लिए आईसीएआर-सीआईबीए द्वारा विकसित मत्स्य अपशिष्ट प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी को दिनांक 16 मई, 2019 को चेन्नई के सीबा मुख्यालय में एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से श्री नागकिशोर मुदेदला और श्री श्यामल राव मरदानी, गुडीवाड़ा, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश के अक्वा-उद्यमियों को हस्तांतरित किया गया है।

समझौते के तहत, आईसीएआर-सिबा प्लांकटनप्लस उत्पादन तकनीक को गैर-अनन्य आधार पर स्थानांतरित करेंगे और प्लांकटनप्लस के उत्पादन के लिए उद्यमियों को आवश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान करेंगे। कृषक उद्यमी श्री नागकिशोर मुद्दला के साथ, डॉ. के के विजयन,निदेशक, सिबा, जिन्होंने सिबा के लिए समझौता ज्ञापन निष्पादित किया, ने प्लैंकटनप्लस, जलकृषि पालन प्रणाली में में प्लवक उत्पादन को बढ़ाने के लिए एक उत्पाद, के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह मॉडल और मत्स्य कचड़े को मूल्य वर्धित उत्पादों में परिवर्तित करने का एक चिरस्थाई मॉडल, जो स्वच्छ भारत कार्यक्रम के अनुरूप पर्यावरण को साफ करने में भी मदद करेंगे। उन्होंने अपने गाँव के मछुआरों के लिए एक वैकल्पिक आजीविका गतिविधि के रूप में मत्स्य कचड़े को पुनर्चक्रण करके धन में बदलने हेतु नंबिकै मत्स्य कृषक समूह, नंबिकै नगर, चेन्नई, के साथ सिबा की साझेदारी को याद किया।

डॉ. देबासीस डे, सिबा के प्लैंकटनप्लस विकास कार्यक्रम के प्रमुख वैज्ञानिक और टीम लीडर ने इस एमओयू के महत्व के बारे में जानकारी दी और जलकृषि में प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति और लाभों के बारे में रेखांकित किया। श्री नागकिशोर मुदेदला और उनकी साथी श्री सियामाला राव मरदानी ने आंध्र प्रदेश के मत्स्य और श्रिम्प फार्म दोनों में फील्ड ट्रायल के दौरान उत्पाद का उपयोग करने में अपनी संतुष्टि व्यक्त की। देश भर के मत्स्य बाजारों को साफ करने की क्षमता इस तकनीक में है और अर्थव्यवस्था की अवधारणा के रूप में कचड़े से धन का प्राप्ति के लिए वैकल्पिक आजीविका प्रदान करने में भी सहायक होंगे।

- ICAR-CIBA

Advertisement Tariff in MPEDA Newsletter
Rate Per Insertion

#Back Cover	(Colour)	Rs. 15,000/-	US$ 250/-
#Inside Cover	"	Rs. 10,000/-	US$ 200/-
Inside Full Page	"	Rs. 8,000/-	US$ 150/-
Inside Half Page	"	Rs. 4,000/-	US$ 75/-

* GST @ 18% is extra
# Back Cover and Inside cover - Booked

Ten Percent concession for contract advertisement for one year (12 issues) or more.
Matter for advertisement should be provided by the advertiser in JPEG or PDF format in CMYK mode.

Mechanical Data : Size : 27 x 20 cms.
Printing : Offset (Multi-colour)
Print Area : Full Page : 23 x 17.5 cm, Half Page : 11.5 x 17.5 cm

For details contact:
Deputy Director (MP) MPEDA House, Panampilly Avenue, Cochin - 682036 Tel: +91 484 2321722, 2311979
Fax: +91 484 2312812, E-mail : newslet@mpeda.gov.in

PRAWN FEED
AVANTI
FEEDS LIMITED
In the business of quality Prawn feed and Prawn Exports
An ISO 9001: 2008 Certified Company
Aiding sustainability
& reliability to Aquaculture
MANAMEI
VANNAMEI FEED
FEED NO. 4
VANNAMEI FEED
SHRIMP FEED
PROFEED 4
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
TITAN
PRAWN FEED
BLACK TIGER
SHRIMP FEED
Shrimp Hatchery
Feed Plant - Gujarat
Prawn Feed & Fish Feed
Prawn Processing & Exports
INNOVATIVE - SCIENTIFICALLY FORMULATED - PROVEN
• GREATER APPETITE • HEALTHY & FASTER GROWTH
• LOW FCR WITH HIGHER RETURNS • FRIENDLY WATER QUALITY
AVANT AQUA HEALTH CARE PRODUCTS
AVANTI A.H.C.P. RANGE
Thai Union
IN COLLABORATION WITH:
THAI UNION FEEDMILL CO., LTD.,
Thailand.
Avant Miner Mate
Chelated Trace Mineral Supplement
Avant Saldo Mixtos
Marine Mineral
Avant D-Flow
Water Quality Improver
Avant Pro W
Soil & Water Probiotic
Avant Bact
Gut Probiotic
Avant AmmoniAbsorb
Ammonia Absorber
Avant Life
Oxy-Generator
Avant Immupak
Immunity Enhancer
Avant Catcher
Corporate Office: Avanti Feeds Limited
G-2, Concord Apartments 6-3-658, Somajiguda, Hyderabad - 500 082, India.
Ph: 040-2331 0260 / 61 Fax: 040-2331 1604. Web: www.avantifeeds.com
Regd. Office: Avanti Feeds Limited.
H.No.: 3, Plot No.: 3, Baymount, Rushikonda, Visakhapatnam - 530 045, Andhra Pradesh.

Contact us to experience our expertise:
Raja Chandnani
Phone: **+44 20 74446320**
Email: **Raja.Chandnani@integrogroup.com**
www.Integrouk.com

INTEGRO UK
INSURANCE BROKERS